



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 176]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 31, 2006/श्रावण 9, 1928

No. 176]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 31, 2006/SRAVANA 9, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 जुलाई, 2006

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. एवं थाईलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित बायस टायरों के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 14/9/2005-डीजीएडी.—1. 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए

2. चूंकि ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) (जिसे एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) ने वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान), उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष एक आवेदन पत्र दाखिल किया है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य और थाईलैंड (जिन्हें एतदपश्चात् "संबद्ध देश" अथवा चीन और थाईलैंड कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित बस एवं लॉरी/ट्रकों के लिए बायस टायरों (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु अथवा बायस टायर कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और इन संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए पाटनरोधी जांच शुरू करने का अनुरोध किया गया है।

3. और चूंकि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर पर्याप्तता एवं यथार्थता के संबंध में इसकी जांच करने के पश्चात् दिनांक 30 सितंबर, 2005 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया था जिसे भारत के राजपत्र असाधारण में

प्रकाशित किया गया था जिसमें कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा एवं प्रभाव और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि जिसे यदि लगाया जाता है तो वह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी, की अनुशंसा करने की जरूरत का निर्धारण करने के लिए नियमावली के उप- नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी।

क. प्रक्रिया

4. इस जांच के संबंध में प्राधिकारी द्वारा नीचे वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है।
- (i) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उप- नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले आवेदक द्वारा दिए गए पाटन संबंधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देश के राजदूतावास को सूचना दी थी।
- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 30 दिसंबर, 2005 की जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियां आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावास, संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, आयातकों और घरेलू उद्योग को भेजी थीं और उनसे जांच शुरूआत अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था।
- (iii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम के अनुसार ज्ञात निर्यातकों एवं चीन जन. गण. तथा थाइलैंड के राजदूतावासों को आवेदन पत्र के अगोपनीय अंश की प्रतियां उपलब्ध करायी थीं।
- (iv) नियम 6 के अनुसार भारत में चीन जनवादी गणराज्य और थाइलैंड के राजदूतावासों को जांच शुरूआत के संबंध में इस अनुरोध के साथ सूचना दी गई थी कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को विनिर्दिष्ट समय के भीतर प्रश्नावली का जवाब देने की सलाह दें। निर्यातकों के नाम एवं पतों के साथ निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्रों एवं प्रश्नावली की एक प्रति भी उनको भेजी गई थी।
- (v) आवेदक ने प्राधिकारी को वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ चीन को एक गैर- बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानने का अनुरोध किया था। जांच शुरूआत के प्रयोजनार्थ आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार श्रीलंका को एक उपयुक्त तीसरे बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मान लेने के बाद श्रीलंका में संबद्ध वस्तुओं की कीमत के आधार पर चीन जन. गण. में सामान्य मूल्य पर विचार किया गया था। प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों को यह सूचित किया था कि यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- 1 के पैरा 7 एवं 8 के आलोक में आवेदक के दावे की जांच किए जाने का प्रस्ताव है। इसलिए चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तुओं के संबंधित निर्यातकों/उत्पादकों को पैराग्राफ 8 के उप- पैराग्राफ (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी ताकि प्राधिकारी यह विचार कर सकें कि क्या उन सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किया जाना चाहिए जो यह प्रदर्शित कर सकते थे कि वे उक्त पैराग्राफ में निर्धारित मानकों को पूरा करते हैं। बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान करने के लिए एक प्रश्नावली चीन में सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों और चीन जनवादी गणराज्य के राजदूतावास को अग्रेषित की गई थी।
- (vi) प्राधिकारी ने संगत सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी;

चीन:

1. येलो सी टायर्स
डोंग हाई रोड क्विंगडाओ, चीन
2. शैंगडोंग हांगशेंग रबड़ कं. लि.
डावांग इंडस्ट्री जोन, गुआंगराओ,
शैंगडोंग, चीन पी. सी.- 257335
3. क्विंगडाओ डबलस्टार टायर इंडस्ट्रियल कं.,
नं. 95, क्विंगडाओ रोड, जिआओनान,
डेवलपमेंट एरिया, चीन
4. क्विंगडाओ तेंगजियांग टायर कं. लि.
नं. 425 बिल्डिंग सी, क्विंगडाओ वर्ल्ड ट्रेड सेंटर,
एच. के. मिडल रोड,
क्विंगडाओ, चीन- 266071
5. शैंगडोंग चेंगशान टायर कं.
11, रोंगएन रोंगचेंग सिटी, शैंगडोंग प्रोविन्स, चीन
6. चायोंग लांग मार्च टायर कं. लि.
नं. 1, जियांगयेंग रोड, लोंगचेंग डिस्ट्रिक्ट,
चायोंग सिटी, लायनिंग प्रोविन्स, चीन
7. ट्राएंगल टायर कं. लि.
नं. 56, क्विंगडाओ मिडल रोड,
वेहाई, शैंगडोंग, चीन
8. शैंगडोंग जिन्यू टायर कं. लि.
1504 किलीमैन्शन, नं. 2 नानजिंग रोड, क्विंगडाओ, शैंगडोंग, चीन
9. क्विंगडाओ, येलो सी रबड़ ग्रुप कं.
क्विंगडाओ रबड़ इंडस्ट्री पार्क, हांगटैन, चेंग येंग डिस्ट्रिक्ट, क्विंगडाओ, चीन
10. शैंगडोंग योंगटाई केमिकल ग्रुप लि.
डावांग रबड़ इंडस्ट्री एरिया, गुवांगराओ, डोंगयिंग,
शैंगडोंग, चीन जन. गण.
11. शैंगडोंग लिंगलॉग रबड़ लि.
नं. 170 जिनचेंग रोड, झाओयुआन सिटी,
शैंगडोंग, चीन- 265400

12. गुआंगझोऊ पर्ल रिवर रबड़ टायर लि.
तान्बू, हुआङ्ग, गुआंगझोऊ- 510828, चीन
13. हेनान टायर कं. लि.
48 जियाओडोंग साउथ रोड, जियाङ्ग, हेनान, चीन

थाईलैंड

1. हाईहीरो कं. लि.,
408/63-64 फाहोलियोथिन रोड,
समसेन्नाई, फायाथाई डिस्ट्रिक्ट, बी के के 10400, थाईलैंड

2. थाई ब्रिजस्टोन कं. लि.
14/3 फाहोलियोथिन रोड, टी. कलॉगनुएंग,
ए. कलॉग लुआंग, पाथुमथानी, थाईलैंड 12120

3. ओटानी टायर कं. लि.
55 एमयू 7, पेचकासेम के. एम. 37 रोड,
टी. कलॉगमाई, ए. सम्प्रान, नाकोरनपैथोम, थाईलैंड

(vii) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में संबद्ध निर्यातकों में से किसी ने भी विनिर्दिष्ट समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया था। मै. शौगडोंग जिन्यू टायर कं. लि. ने अपना पहला जवाब दिनांक 21 जून, 2006 को दाखिल किया था जो अत्यधिक त्रुटिपूर्ण था। अतिरिक्त सूचना दिनांक 21 जुलाई, 2006 को उपलब्ध करायी गयी थी जो अपूर्ण है। यद्यपि जवाब समय सीमा के बहुत समय बाद दाखिल किया गया था, प्राधिकारी ने इसकी जांच करना उपयुक्त समझा था।

(viii) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना की मांग करते हुए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों एवं प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं।

आयातक

- (क) मै. चङ्ढा टायर ट्रेडर्स
- (ख) मै. काक्स एंड बिल्स प्रा. लि.
- (ग) मै. अनिरुद्ध इंडस्ट्रीज
- (घ) मै. विकास रोड कैरियर्स
- (ङ) मै. इंटरनेशनल ट्रेडर
- (च) मै. एएए इम्पेक्स
- (छ) मै. जमनादास एंड ब्रदर्स

प्रयोक्ता

- (क) मै. टाटा मोटर्स लि.
- (ख) मै. वोल्वो इंडिया प्रा. लि.
- (ग) मै. अशोक लीलैंड लि.
- (घ) मै. आयशर मोटर्स लि.

- (ix) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में केवल मै. टाटा मोटर्स जो संबद्ध उत्पाद का एक प्रयोक्ता है, ने जवाब दिया है। लेकिन कंपनी ने प्रश्नावली का कोई जवाब दाखिल नहीं किया है, न ही उन्होंने संबद्ध देशों से संबद्ध उत्पाद का आयात किया है। टाटा मोटर्स के अलावा, आटोमोटिव टायर इम्पोर्टर्स एसोसिएशन (एटीआईए), ऑल इंडिया टायर डीलर्स फेडरेशन (एआईटीडीए), आल इंडिया कन्फेडरेश ऑफ गुड्स व्हीकल ऑनर्स एसोसिएशन (एसीओजीओए) ने अपने निवेदन दाखिल किए हैं। किसी भी आयातक ने प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है। एटीआईए, एआईटीडीए और एसीओजीओए अथवा उनके सदस्यों ने भी प्रश्नावली में सूचना दाखिल नहीं की है लेकिन उन्होंने पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के विरुद्ध अपना तर्क दिया है जिस पर इन जांच परिणामों में विचार किया गया है।
- (x) पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) को अनुरोध किया गया था।
- (xi) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया था जिसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा गया है।
- (xii) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत और भारत में संबद्ध वस्तुओं को बनाने और इनकी बिक्री करने की लागत का पक्षिकलन किया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा। इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग को किसी कार्यशील लागत लेखाकार द्वारा विधिवत रूप से प्रमाणित अपनी उत्पादन लागत देने का निर्देश दिया गया था।
- (xiii) इस अधिसूचना में *** गोपनीय आधार पर आवेदक द्वारा प्रस्तुत और प्राधिकारी द्वारा नियमावली के अंतर्गत विचार की गई सूचना को दर्शाता है।
- (xiv) जांच 1 अप्रैल, 2004 से शुरू होकर 30 जून, 2005 तक की अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में जांच की प्रवृत्तियों में अप्रैल, 2001 से मार्च, 2002; अप्रैल, 2002 से मार्च, 2003; अप्रैल, 2003 से मार्च, 2004 और जांच अवधि शामिल थी।
- (xv) प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के औद्योगिक प्रयोक्ताओं और ज्ञात प्रतिनिधि ग्राहक संगठनों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध से संबंधित जांच के प्रासंगिक समझी गई सूचना प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया था।
- (xvi) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान की गई सूचना की विशुद्धता के संबंध में इस स्तर पर आवश्यक समझी गई सीमा तक स्वयं को संतुष्ट किया था।

ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

5. विचाराधीन उत्पाद चीन जन. गण. और थाइलैंड के मूल के अथवा, वहां से निर्यातित नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक नॉन रेडियल बायस टायर्स, ट्यूब्स और रबड़ की पट्टियाँ हैं जिनका प्रयोग बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में किया जाता है। बायस टायरों को तकनीकी रूप से डायगोनल प्लाई अथवा क्रास प्लाई टायरों के रूप में जाना जाता है। किसी वाहन में टायर का प्रयोग एक ट्यूब और एक पट्टी के साथ किया जाता है। एक टायर, एक ट्यूब और एक पट्टी को एक साथ एक "टायर सेट" के रूप में बेचा जाता है। "टीटीएफ" शब्द उद्योग में एक "टायर सेट" को निर्दिष्ट करने के लिए प्रचलित है। टायर, ट्यूब और पट्टी संयुक्त रूप से किसी वाहन के "टायर" का कार्य करते हैं। टायरों के अन्दर ट्यूब में हवा भरी जाती है और पहिये और ट्यूब के बीच एक

पट्टी का प्रयोग किया जाता है ताकि पहियों के साथ संसंजन के कारण ट्यूब के फटने से बचा जा सके। टायर, ट्यूब एवं पट्टी का उत्पादकों द्वारा अलग-अलग उत्पादन किया जाता है। टायर, ट्यूब और पट्टी की बिक्री मुख्यतः "टीटीएफ अथवा" टायर सेट" आधार पर की जाती है। तथापि, उन्हें अलग-अलग भी बेचा जाता है। इस उत्पाद का आयात टीटीएफ आधार पर और अलग-अलग भी बेचा जाता है। इस उत्पाद का आयात टीटीएफ आधार पर और अलग-अलग इकाइयों दोनों आधारों पर किया जाता है और यह किसी भी संयोजन में किया जा सकता है। बसों और लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त टायर, ट्यूब और पट्टी इस बात का लिहाज किए बिना विचाराधीन उत्पाद हैं कि क्या वे टीटीएफ रूप में है अथवा टायर, ट्यूब और पट्टी के रूप में अलग-अलग हैं।

6. इस उत्पाद के कार्यक्षेत्र में केवल बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त बायस टायर हैं। उनका ट्रक, बस, लॉरी, हल्के वाणिज्यिक वाहन, यात्री कार, जीप, ट्रैक्टर, दुपहिया, तिपहिया, पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले वाहन, अर्थमूवर्स, औद्योगिक टायरों, वायुयानों आदि में प्रयोग के लिए उत्पादन किया जाता है। तथापि, विचाराधीन उत्पाद वह किस्म है जिसका प्रयोग केवल बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में किया जाता है। टायरों की अन्य सभी किस्में विचाराधीन उत्पाद और वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र से परे हैं।

7. टायरों की दो श्रेणियां अर्थात् रेडियल और नॉन-रेडियल हैं। नॉन-रेडियल श्रेणी बायस अथवा डायगोनल प्लाई टायरों के रूप में जानी जाती है। यह वर्गीकरण भारतीय मानकों द्वारा विनिर्दिष्ट भार-फुलाव के दबाव के संबंध पर आधारित है। इस उत्पाद के कार्यक्षेत्र में केवल बसों एवं लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त नॉन-रेडियल अथवा बायस टायर शामिल हैं।

8. टायरों, ट्यूबों और पट्टियों का अलग-अलग उत्पादन किया जाता है। तथापि, वे अध्याय 40 में सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 40112090 और पट्टी एवं ट्यूब क्रमशः 40131020 और 40139049 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। तथापि, ये सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और किसी भी तरह जांच के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं हैं।

प्रयोक्ताओं एवं आयातकों की एसोसिएशन की टिप्पणियां

9. जवाब देने वाले एसोसिएशनों ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में अपनी टिप्पणियां दाखिल की हैं। उन्होंने निवेदन किया है कि उत्पाद का कार्यक्षेत्र काफी व्यापक छोड़ा गया है क्योंकि इसमें अलग-अलग आकार शामिल हैं। उत्पाद का वर्णन आयात किए जा रहे उत्पाद के अनुरूप नहीं है। इस उत्पाद में लग, अर्द्ध रिब, रिब आदि शामिल हैं और टायरों को आमतौर पर इनके आकार से अभिज्ञात किया जाता है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई सूचना में भारी वाणिज्यिक वाहनों (एचसीवी) और हल्के वाणिज्यिक वाहनों (एलसीवी) में विभेद नहीं किया गया है, हालांकि ट्रक एवं बस के टायरों में एचसीवी और एलसीवी दोनों शामिल हैं। आयातित टायर गुणवत्ता में घटिया हैं और मुख्य रूप से फिर से तला लगाए गए टायरों के बदले में इस्तेमाल किए जाते हैं। इस उत्पाद के वर्णन को आकारों के अनुसार संशोधित किए जाने की जरूरत है। ओईएमएस को उपलब्ध कराए गए टायरों और खुदरा बाजार को उपलब्ध कराए गए टायरों में अत्यधिक अन्तर है। यह विभाजन घरेलू उद्योग की क्षति की जांच करते समय किया जाना अपेक्षित है।

घरेलू उद्योग के विचार

10. याचिका तथा जांच शुरूआत नोटिस में विचाराधीन उत्पाद का दायरा सुपरिभाषित है और इस संबंध में भ्रम की कोई स्थिति नहीं है। यह सही है कि टायरों के विभिन्न प्रकार हैं और ये मूल्य की तुलना के प्रयोजनार्थ सुसंगत हैं। जहां तक विचाराधीन उत्पाद के दायरे का प्रश्न है, विभिन्न प्रकार के ये टायर विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर ही हैं। इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि इसके दायरे में एलसीवी टायरों को भी शामिल किया जाए। तथापि, इन पक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों को देखते हुए यह सुनिश्चित करने के लिए कि अवांछित उत्पाद शुल्कों के दायरे में शामिल न हो जाएं, प्राधिकारी द्वारा टायरों के साइज तथा अन्य मानदण्डों को भी निर्दिष्ट किया जा सकता है।

11. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि घरेलू उत्पादकों द्वारा उत्पादित सम्बद्ध उत्पाद तथा सम्बद्ध देशों से आयातित उत्पादों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। विशेषताओं के रूप में यथा भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया व प्रौद्योगिकी, कार्य एवं उपयोग, गुणवत्ता, उत्पाद विनिर्देशन, मूल्य संरचना, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से उनकी परस्पर तुलना की जा सकती है। याचिकाकर्ता का दावा है कि दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से परस्पर प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता दोनों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं। घरेलू उद्योग दो बाजार खण्डों अर्थात् घरेलू आफ्टर मार्केट तथा घरेलू मूल उपकरण विनिर्माताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। आवेदनकर्ताओं ने कहा है कि घरेलू आफ्टर मार्केट, जो टायरों की लगभग 77% बिक्री करता है, में आयात अब भी हो रहा है। अतः आयातित सामग्री तथा घरेलू उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा है। भारतीय उत्पादक सीधे अथवा अपने डीलरों के माध्यम से इन व्यापारियों/रीसेलर्स से उसी सामान्य श्रेणी के उपभोक्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। आवेदक कंपनियों द्वारा रीसेलरों के माध्यम से उल्लेखनीय मात्रा में बिक्री (लगभग 77%) की जाती है। सभी रीसेलर्स चाहे वे घरेलू उत्पाद बेचते हों अथवा आयातित, उत्पाद की आपूर्ति सामान्य श्रेणी के उपभोक्ता को ही करते हैं। ओ ई एम अथवा आफ्टर मार्केट को आपूर्तित टायरों की गुणवत्ता में कोई अन्तर नहीं है। टायरों का बी आई एस प्रमाणीकरण स्वैच्छिक स्वरूप का है अतः बीआईएस प्रमाणीकरण युक्त अथवा रहित टायरों की आपूर्ति ओईएम तथा आफ्टर मार्केट दोनों को की जा रही है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

12. जहां तक विचाराधीन उत्पाद के दायरे का प्रश्न है, प्राधिकारी ने पाया है कि याचिका तथा जांच शुरूआत सूचना में विचाराधीन उत्पाद के दायरे का उल्लेख स्पष्ट रूप से कर दिया गया है। विचाराधीन उत्पाद में विभिन्न प्रकार के बायस टायर, जिन्हें लग्स कहा जाता है, सेमी रिब, रिब आदि शामिल हैं। तथापि, ये पात्र विविध प्रकार के विचाराधीन उत्पाद हैं। यह स्पष्ट किया जाता है कि एलसीवी के टायर विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं। हितबद्ध पक्षों के तर्कों को देखते हुए यह सुसंगत तथा आवश्यक प्रतीत होता है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे को परिभाषित करने के प्रयोजन से टायरों के साइज को भी विनिर्दिष्ट किया जाए। इस संबंध में प्राधिकारी ने यह पाया है कि किसी खास अनुप्रयोग हेतु विशिष्ट आकार के टायर ही प्रयुक्त किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए छोटी रिम के 16" डायर कोड वाला टायर एचसीवी में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता; इसी प्रकार छोटी रिम वाला 20" डायर कोड का टायर एलसीवी में प्रयुक्त किया जा सकता।

13. हितबद्ध पक्षों के तर्कों पर ध्यान देते हुए प्राधिकारी ने यह उचित माना है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में टायरों के साइज को भी शामिल किया जाए। तदनुसार, विचाराधीन उत्पाद को "ट्यूब सहित अथवा ट्यूब रहित एवं/अथवा रबड़ के फ्लैप युक्त नया/अप्रयुक्त न्यूमेटिक नॉन रेडियल टायर, जिसे बसों अथवा लॉरियों/ट्रकों में प्रयुक्त किया जाता है और जो न्यूनतम रिम वाला, 16" डायर कोड से अधिक हो" के रूप में परिभाषित किया जाता है।

14. जहां तक इस तर्क का प्रश्न है कि ओईएम तथा प्रतिस्थापन बाजार हेतु बने उत्पाद अलग-अलग हैं, प्राधिकारी ने नोट किया है कि इस दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके विपरीत घरेलू उद्योग के परिसर में किए गए संस्थापन में देखा गया है कि ओईएम तथा आफ्टर मार्केट के लिए बना उत्पाद एक ही है। यह भी नोट किया गया कि इस बात का कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया कि आयातित उत्पाद की खपत अंततः प्रतिस्थापन बाजार में ही हुई है और इसे ओईएम में प्रयुक्त नहीं किया गया।

15. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में समान वस्तु की परिभाषा निम्नलिखित है -

"समान वस्तुओं का तात्पर्य एक ऐसी वस्तु से है जो जांच की जा रही वस्तु से हर दृष्टिकोण में समान अथवा समरूप है अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में अन्य ऐसी वस्तु से तात्पर्य है जो सभी दृष्टि से समान नहीं है, परन्तु उसमें जांच की जा रही वस्तुओं से मिलते-जुलते सभी गुण मौजूद हैं।"

16. याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएं चीन जन. गण. एवं थाइलैंड के उद्गम की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के समान वस्तुएं हैं। इम्पोर्टर्स एसोसिएशन ने अपने प्रस्तुतिकरण में दावा किया है कि आयातित वस्तुएं घटिया गुणवत्ता की हैं। तथापि, गुणवत्ता में अन्तर के कारण उत्पाद को उपर्युक्त विवरण से भिन्न नहीं माना जा सकता। आयातित उत्पाद भी उसी वर्ग के उपभोक्ताओं द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। उस उत्पाद के भी आधारभूत वही भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म हैं और उसके कार्य व उपयोग भी वही हैं। ऐसा मामला होने पर यह नहीं कहा जा सकता कि गुणवत्ता में अन्तर की सम्भावना के कारण आयातक द्वारा आयातित उत्पाद घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध उत्पाद से भिन्न है। इसके अलावा, किसी भी निर्यातक/आयातक ने प्राधिकारी को इस संबंध में सुसंगत जानकारी उपलब्ध नहीं कराई है।

17. उपर्युक्त दावों की जांच के बाद अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि चीन तथा थाइलैंड से आयातित उत्पाद व घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद में कोई भिन्नता नहीं है। यदि यह मान भी लिया जाए कि आयातित उत्पाद घटिया गुणवत्ता का है तो नियम 2(घ) के अर्थ के भीतर, गुणवत्ता में अन्तर के कारण आयातित तथा घरेलू उत्पाद दो भिन्न उत्पाद नहीं हो जाते।

ग. घरेलू उद्योग

17. नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग की परिभाषा निम्नलिखित है -

(ख) "घरेलू उद्योग का तात्पर्य ऐसे घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण में और उससे जुड़े कार्यकलापों में पूर्ण रूप से कार्यरत हैं या जिनका उक्त वस्तु का संचयी उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक प्रमुख भाग है बशर्ते कि ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित न हों या वे स्वयं उसका आयात न कर रहे हों, ऐसे मामले में इस प्रकार के उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाएगा।"

18. यह याचिका घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स अपोलो टायर्स लि. तथा मैसर्स सीएट लिमिटेड द्वारा प्रदत्त जानकारी का उपयोग करते हुए आटोमोटिव टायर मेन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस याचिका को मैसर्स जेके टायर्स (जे के इण्डस्ट्रीज लि.), मैसर्स बिरला टायर्स (केसोराम इण्डस्ट्रीज लि.) एवं एमआरएफ लिमिटेड ने समर्थन दिया है। जांच की शुरुआत के पश्चात प्राधिकारी द्वारा समर्थक कंपनियों से भी क्षति संबंधी सूचना मांगी गई। इसके उत्तर में जे. के. टायर्स एवं बिरला टायर्स ने जांच में सहभागिता की इच्छा प्रदर्शित की और निर्दिष्ट प्राधिकारी को निर्धारित प्रपत्र और तरीके से अपेक्षित सूचना उपलब्ध कराई।

19. जिन एसोसिएशनों ने प्राधिकारी को उत्तर प्रस्तुत किए उन्होंने इस तथ्य पर कोई विवाद नहीं किया कि यह याचिका घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत की गई है जो घरेलू उत्पादकों का प्रमुख हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है; न ही उन्होंने इस बात पर विवाद किया कि सहभागी कंपनियां घरेलू उद्योग हैं। तथापि, टायर आयातकों के एसोसिएशन ने दावा किया कि कतिपय घरेलू उत्पादक चीन के उत्पादकों/निर्यातकों/व्यापारियों से सम्बद्ध हैं; जो लम्बे समय से अस्तित्व में हैं। प्राधिकारी ने इस संबंध में याचिकाकर्ताओं से स्पष्टीकरण मांगा, जिन्होंने प्रमाणित किया कि सहभागी कंपनियों में से कोई भी निर्यातक देशों के किसी पक्षकार से संबंधित नहीं हैं। मैसर्स अपोलो टायर्स इन्टरनेशनल लि. ने भी प्रमाणित किया कि कंपनी चीन एवं थाईलैण्ड के विचाराधीन उत्पाद के निर्यात अथवा आयात के संबंध में भारतीय बाजार के विचाराधीन उत्पाद के बारे में कोई व्यापारिक संबंध नहीं हैं और कंपनी ने जांच अवधि में किसी भी सम्भावित व्यापारिक संबंध के दौरान चीन अथवा थाईलैण्ड से विचाराधीन उत्पाद का आयात/निर्यात नहीं किया है। इसके अलावा, याचिका के संबंधित भाग में याचिकाकर्ताओं ने घोषणाएं भी की हैं। यह नहीं पाया गया कि ये घोषणाएं गलत हैं।

20. विस्तृत प्रारम्भिक जांच के बाद प्राधिकारी ने नोट दिया है कि (क) चार विनिर्माताओं यथा अपोलो टायर्स लि.; सीएट लि., जेके टायर्स लि. (जे. के. इण्डस्ट्रीज लि.) तथा बिरला टायर्स (केसोराम इण्डस्ट्रीज लि.) का उत्पादन भारतीय उत्पादन का प्रमुख हिस्सा है; (ख) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन में याचिका को खुला समर्थन देने वाले घरेलू उत्पादकों का योगदान 50% से अधिक है; और (ग) याचिका घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से प्रस्तुत की गई।

21. सावधानीपूर्वक जांच करने के बाद प्राधिकारी का यह अभिमत है कि वर्तमान जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ नियम 2(घ) के साथ पठित नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर अपोलो टायर्स, सीएट टायर्स, जे के टायर्स और बिरला टायर्स घरेलू उद्योग हैं।

घ. सामान्य मूल्य

याचिकाकर्ताओं के दावे

22. याचिकाकर्ताओं ने दावा किया कि चीन एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था है। किसी भी देश ने विस्तृत प्रक्रिया, जांच तथा मूल्यांकन करने के बाद चीन को बाजार अर्थव्यवस्था देश का दर्जा नहीं दिया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि चीन भी अभिगमन संधि में इस बात पर सहमत है कि डब्ल्यूटीओ सदस्य 11 दिसम्बर, 2016 तक एनएमई पाटनरोधी क्रियाविधि का उपयोग कर सकते हैं। चीन को पिछले तीन वर्षों में यूरोपीय आयोग और अमरीका द्वारा गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना गया है। यूरोपीय आयोग और अमरीका विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं। भारत में भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना है। दिनांक 31 मई, 2002 को किए गए संशोधन के बाद चीन के विरुद्ध शुरू की गई लगभग सभी जांचों में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना है। दिनांक 4 जनवरी, 2003 को किए गए संशोधन के बाद भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना है।

23. चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु याचिकाकर्ताओं ने श्रीलंका को समुचित सहोदर देश के रूप में विचार करने का प्रस्ताव किया और श्रीलंका के घरेलू बाजार में सम्बद्ध उत्पाद की कीमत संबंधी जानकारी प्रदान की। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि श्रीलंका पर विचार करने से प्राधिकारी श्रीलंका में विक्रय मूल्य से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी हासिल करने में सक्षम होंगे। यह भी तर्क दिया गया कि श्रीलंका में बायस टायर उद्योग प्रतिस्पर्धी है। याचिकाकर्ताओं ने श्रीलंका की कीमत पर आधारित सामान्य मूल्य के अपने दावे को श्रीलंका में उत्पादन लागत और भारत में उत्पादन लागत से पुष्ट किया।

24. याचिकाकर्ताओं ने दावा किया कि थाईलैण्ड के उत्पादक सम्बद्ध वस्तुओं का भारत में पाटन कर रहे हैं। थाईलैण्ड के घरेलू बाजार में सम्बद्ध उत्पाद की प्रचलित कीमतों के बारे में जानकारी हासिल करने के प्रयास किए गए। तथापि उनके घरेलू बाजार में सम्बद्ध उत्पाद की वास्तविक सौदा-बिक्री कीमत (उत्पादक तथा थोक व्यापारी/वितरक के बीच) कोई विश्वसनीय, अधिकृत तथा सही जानकारी हासिल नहीं हो सकी। इसके मद्देनजर याचिकाकर्ताओं ने थाईलैण्ड में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उत्पादन लागत के अनुमान का प्रयोग किया।

प्रयोक्ताओं एवं आयातकों के एसोसिएशनों की टिप्पणियां

25. सामान्य मूल्य के प्रयोजनार्थ श्रीलंका को समुचित सहोदर देश मानने का प्रतिवाद करते हुए उत्तरदाता एसोसिएशनों ने तर्क प्रस्तुत किए हैं। चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने के याचिकाकर्ता के अनुरोध के विरुद्ध उन्होंने कोई ठोस साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। एसोसिएशन ने यह दावा किया है कि श्रीलंका के बाजार में पर्याप्त प्रतिस्पर्धा का अभाव होने और श्रीलंका के

उत्पादक के एक भारतीय उत्पादक से संबंधित होने के कारण श्रीलंका को समुचित सहोदर देश नहीं माना जा सकता। घरेलू उद्योग द्वारा ओईएम तथा खुदरा क्षेत्र को आपूर्ति तायरों में भिन्नता है। यह भी दावा किया गया है कि थाईलैण्ड के मामले में सामान्य मूल्य की संरचना हेतु आंकड़ों का उपयोग करते समय ओईएम खण्ड में घरेलू उद्योग की लागत की गणना करने की आवश्यकता होगी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

26. गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के संबंध में पाटनरोधी जांच में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 7 तथा 8 के अनुसरण में किया जाना अपेक्षित है।

27. प्राधिकारी ने नोट किया है कि शेनडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. को छोड़कर चीन अथवा थाईलैण्ड के किसी भी उत्पादक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं भेजा है। शेनडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. को छोड़कर चीन के उत्पादकों में से किसी ने भी बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा देने का दावा नहीं किया है और न ही निर्धारित प्रश्नावली में उत्तर प्रस्तुत किए हैं। शेनडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. ने दावा किया है कि उनकी कम्पनी को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया जाना चाहिए; जिसकी जांच के बाद, कि क्या कम्पनी को बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा दिया जा सकता है, यह पाया गया कि अपर्याप्त है।

28. शेनडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. के दावे की जांच: मैसर्स शेनडॉंग जिन्यू टायर कम्पनी लि. ने पहला उत्तर दिनांक 21 जून, 2006 को प्रस्तुत किया, जिसमें भारी कमियाँ थीं। अनुमत्य समय सीमा के बाद प्रश्नावली प्रस्तुत करने में किए गए अत्यधिक विलम्ब का कोई कारण कम्पनी द्वारा नहीं बताया गया। इसके अलावा, यह भी पाया गया कि प्रस्तुत किए गए उत्तर में प्रश्नावली से संबंधित परिशिष्ट शामिल नहीं है जिनके बारे में कहा गया कि इन्हें अलग से प्रस्तुत किया जा रहा है। अतिरिक्त सूचना भी दिनांक 21 जुलाई, 2006 को उपलब्ध कराई गई और यह भी अपूर्ण थी। यद्यपि, उत्तर निर्धारित समय सीमा से बहुत बाद में प्राप्त हुए तथापि, प्राधिकारी ने इनकी जांच करना उचित समझा। उत्तरों की जांच में यह देखा गया कि बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा देने की दृष्टि से ये अपूर्ण और अपर्याप्त हैं। प्रस्तुत उत्तरों के संबंध में निम्नलिखित टिप्पणियाँ की जाती हैं -

(क) कम्पनी ने कहा है कि संबंधित उत्पाद वाली उसकी कोई सम्बद्ध कम्पनी नहीं है, जबकि कम्पनी के उत्पाद विवरण पत्र में अनेक कम्पनियाँ सूचीबद्ध हैं जो कम्पनी से संबंधित प्रतीत होती हैं और संबंधित उत्पाद के कार्य में संलग्न हैं।

(ख) जो वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध कराई गई है, वह केवल वर्ष 2005 की है जिसमें लेखापरीक्षकों की रिपोर्ट, तुल्य पत्र एवं आय के विवरण के अतिरिक्त और कोई जानकारी नहीं है। इसमें निदेशकों की रिपोर्ट, लेखों से संबंधित टिप्पणियों और वार्षिक रिपोर्ट के भाग के रूप में अन्य जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई है।

(ग) कम्पनी द्वारा किए गए अनेक दावों के संबंध में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है। उदाहरणार्थ कच्चे माल की खरीद के दावे के संबंध में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है। इसके अलावा, कम्पनी ने यह भी दावा नहीं किया है कि प्रमुख निविष्टियों के मूल्य अधिकांश बाजार मूल्य प्रदर्शित करते हैं, न ही इस संबंध में कोई साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है।

(घ) यद्यपि प्रश्नावली के प्रश्नों के उत्तर में यह कहा गया है कि उनके खातों की लेखा परीक्षा अनिवार्य नहीं है, तथापि वर्ष 2005 की वार्षिक रिपोर्ट में लेखापरीक्षा रिपोर्ट शामिल है। कम्पनी ने कहा है कि यह कम्पनी एक निजी कम्पनी होने और परिवार के ही सदस्यों के स्वामित्व में होने के कारण किसी स्वतंत्र प्रमाणित सार्वजनिक लेखाकार द्वारा लेखा परीक्षा का प्रावधान अथवा कानूनी अपेक्षा नहीं है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी स्थिति में, जहां कम्पनी के वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा किसी स्वतंत्र प्रमाणित सार्वजनिक लेखाकार द्वारा न की गई हो, तो उन वित्तीय विवरणों की प्रमाणिकता, यथार्थता और विश्वसनीयता की कोई गारंटी नहीं है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि कम्पनी के पास आधारभूत लेखांकन रिकार्ड का एक स्पष्ट पाठ है, जिसकी स्वतंत्र लेखापरीक्षा अंतर्राष्ट्रीय लेखांकन मानकों के अनुरूप की गई है और इनका अनुप्रयोग सभी प्रयोजनों के लिए किया जाता है।

(ङ) घरेलू बाजार में बिक्री के बारे में सौदेवार जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई है। इसके अभाव में परिशिष्ट-3क में प्रदत्त सूचना की शुद्धता का अभिनिश्चय नहीं किया जा सका।

(च) परिशिष्ट 3क की सूचना केवल "1000-20 ग्रेड-1 ट्रेलर" तथा "1000-20 सुपर-1" के बारे में है। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या कम्पनी ने अन्य किस्मों की संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन तथा विक्रय नहीं किया है अथवा प्राधिकारी को यह जानकारी नहीं दी है।

(छ) उत्पादन लागत विवरण निर्धारित प्रपत्र व तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है।

29. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी का यह अभिमत है कि निर्यातक के दावे पूर्णतः प्रमाणित नहीं हैं और प्राधिकारी इस समय कम्पनी को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने में असमर्थ हैं। इसके अलावा निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर भी पूर्ण नहीं हैं। अतः प्राधिकारी प्रारम्भिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ प्रस्तुत उत्तरों का उपयोग करने में असमर्थ हैं। तथापि प्राधिकारी कम्पनी के उत्तर पर विचार करेंगे यदि बताई गई कमियों को दूर किया जाए और पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जाए।

30. इन परिस्थितियों में प्राधिकारी चीन की किसी भी कम्पनी पर नियमावली का अनुबंध 8 लागू करने की स्थिति में नहीं है और उन्हें नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 7 का अनुसरण करना होगा। इस नियमावली के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित में से किसी आधार पर किया जा सकता है -

(क) बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत के आधार पर, अथवा

(ख) बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में संरचित मूल्य, अथवा

(ग) ऐसे किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों में।

(घ) यदि ऊपर उल्लिखित विकल्पों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण न किया जा सके तो निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य किसी उचित आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण कर सकते हैं जिसमें उचित लाभ की गुंजाइश को शामिल करने संबंधी समायोजन सहित समान वस्तु के लिए भारत में वास्तविक रूप से भुगतान की गई अथवा भुगतान योग्य कीमत शामिल है।

31. चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए श्रीलंका को समुचित सहोदर देश के रूप में विचार करने के संबंध में याचिकाकर्ता के प्रस्ताव की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई। याचिकाकर्ता द्वारा श्रीलंका के घरेलू बाजार में सम्बद्ध उत्पाद की कीमत संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई गई है। याचिकाकर्ता ने भारत में उत्पादन लागत के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराई है। श्रीलंका में सम्बद्ध उत्पाद का उत्पादन करने वाले एक प्रमुख उत्पादक मेसर्स सिएट केलानी एसोसिएटेड होल्डिंग प्रा. लि. का भारतीय उत्पादक मेसर्स सिएट लि. के साथ संयुक्त उद्यम है। तथापि, सिएट केलानी एसोसिएटेड होल्डिंग प्रा. लि. श्रीलंका की बाजार स्थितियों में मुक्त रूप से प्रचालनरत हैं और भारतीय उत्पादक से इनके संबंध से श्रीलंका की आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार इनके प्रचालनों पर कोई प्रतिबंध नहीं है और श्रीलंका को एक सहोदर देश मानने से कोई विकृति भी उत्पन्न नहीं होती। श्रीलंका में कीमत का निर्धारण श्रीलंका में प्रचलित बाजार प्रवृत्तियों से होता है और यह श्रीलंका की अर्थव्यवस्था के अंतर्गत मौजूदा लागत व कीमत की स्थितियों को प्रदर्शित करता है। याचिकाकर्ता ने श्रीलंका में प्रचलित कीमत पर आधारित सामान्य मूल्य के दावे को श्रीलंका में वास्तविक उत्पादन लागत से सम्पूरित किया है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता ने भारत में उत्पादन लागत पर विचार करके लाभ की समुचित मार्जिन के समायोजन के पश्चात भारत में भुगतानयोग्य कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। याचिकाकर्ता के इस दावे को अस्वीकार करने के लिए कोई पर्याप्त साक्ष्य नहीं है कि चीन के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु श्रीलंका एक उचित तीसरा देश है। वास्तव में यह नोट किया गया है कि भारत में भुगतानयोग्य कीमत, जिसमें लाभ की मार्जिन समायोजित हो, के परिणामस्वरूप सामान्य मूल्य का निर्धारण अधिक होता। रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह उचित मानते हैं कि आगे जांच लम्बित रहने तक इस प्रारम्भिक जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का निर्धारण श्रीलंका में संरचित मूल्य के आधार पर किया जाए।

32. आवेदकों का दावा है कि थाइलैंड में घरेलू बाजार में संबद्ध उत्पाद की प्रचलित कीमतों के बारे में सूचना एकत्र करने के प्रयास किए गए थे। तथापि उनके घरेलू बाजार में संबद्ध उत्पाद की वास्तविक सौदा-बिक्री कीमत (उत्पादक और थोक डीलर/वितरक के बीच) के बारे में कोई तर्कसंगत, तथ्यपूर्ण और सही सूचना प्राप्त नहीं हो सकी। थाइलैंड के किसी उत्पादक ने प्राधिकारी को उत्तर नहीं दिया और न ही थाइलैंड में लागत एवं कीमतों के बारे में प्राधिकारी को कोई सूचना उपलब्ध कराई गई। इन परिस्थितियों में प्राधिकारी ने थाइलैंड में सामान्य मूल्य का निर्धारण, लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए विधिवत ढंग से समायोजित करके उत्पादन की परिकलित लागत के अनुमानों के आधार पर किया है।

33. प्राधिकारी ने आयातकों की एसोसिएशन के इन दावों की जाँच की है कि सामान्य मूल्य को ओईएम खण्ड के लिए टायरों हेतु प्रयोज्य लागत को छोड़कर परिकलित किए जाने की आवश्यकता है। तथापि यह पाया जाता है कि ओईएम के लिए तथा बाजार पश्चात के लिए उत्पादन लागत में कोई अंतर नहीं है। वस्तुतः अंतर केवल बिक्री और वितरण व्ययों के रूप में हो सकता है और यह बाजार पश्चात के लिए उच्च बना रहता है। इस प्रकार यदि प्राधिकारी ओईएम और बाजार पश्चात उत्पादन लागत को अलग करते हैं तो इससे अधिक से अधिक बाजार पश्चात उत्पादन लागत में वृद्धि होगी और परिणामस्वरूप सामान्य मूल्य में वृद्धि होगी क्योंकि आयातित टायरों को केवल बाजार पश्चात बेचा जा रहा है।

ड. निर्यात कीमत

34. प्रयोक्ता और आयातक एसोसिएशन ने तर्क दिया है कि प्राधिकरण को अप्रैल, 2005 - जून, 2005 तिमाही के लिए आईबीआईएस के अनुसार आयात सूचना को स्वीकार नहीं करना चाहिए। यह दावा किया गया था कि शीर्ष 40112090 के अंतर्गत आयातों में कुछेक अन्य टायर शामिल हैं जिन्हें भी जाँच से बाहर रखा जाना चाहिए।

35. आवेदकों ने अपने आवेदन में बताया है कि डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा प्रदत्त सौदावार आयात सूचना आवेदन के समय अप्रैल, 2005 से जून, 2005 की अवधि के लिए उपलब्ध नहीं थी और इसलिए आवेदकों ने इस अवधि के लिए आईबीआईएस के आंकड़ों पर भरोसा किया। आवेदकों ने आगे यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने अनेक जाचों में आयातित सामग्री की मात्रा एवं मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त सूचना पर विचार किया था और यह कि प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा इस संबंध में कोई कारण नहीं दिया गया है कि आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त सूचना क्यों गलत और अविश्वसनीय है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जब डीजीसीआई एण्ड एस के आंकड़े संपूर्ण आवधि के लिए उपलब्ध नहीं हैं तो आईबीआईएस की सूचना का प्रयोग करना अनुचित प्रतीत नहीं होता है।

36. जाँच शुरूआत के बाद से, डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा जाँच की संपूर्ण अवधि के लिए सौदेवार आधार पर आयात सूचना उपलब्ध कराई गई थी। तदनुसार इस आधार पर आयात मात्राओं एवं निर्यात कीमतों का निर्धारण किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि शनडोंग जिनयु टायर कं० लि० द्वारा दिए गए उत्तर को छोड़कर किसी संबद्ध निर्यातक से कोई सहयोग प्राप्त नहीं हुआ है और न ही इस संबंध में प्राधिकारी के समक्ष कोई अन्य सूचना प्रस्तुत की गई है। शनडोंग जिनयु टायर कं० लि० द्वारा

प्रस्तुत उत्तर भी पूरा नहीं है और उसे इस स्तर पर स्वीकार नहीं किया जा सकता है। अतः प्राधिकारी ने डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा प्रदत्त सौदेवार आयात सूचना के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। सीआईएफ निर्यात कीमत को समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़े, पत्तन व्ययों और बैंक प्रभारों के लिए समायोजित किया गया है। आवेदकों ने कमीशन, अप्रत्यक्ष करों और ऋण लागतों के लिए समायोजनों का दावा किया था जिसकी इस स्तर पर अनुमति नहीं दी गई है।

च. पाटन मार्जिन

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि की गई तुलना उचित तुलना होनी चाहिए। प्राधिकारी ने कारखाना द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत दोनों का निर्धारण किया है। यह नोट किया जाता है कि उत्पाद का आयात टायर, ट्यूब फ्लेप (टीटीएफ) के सेट के रूप में या टायर और ट्यूब (टीटी) के सेट के रूप या केवल टायर के रूप में किया जाता है। प्राधिकारी ने अलग-अलग उत्पाद संयोजनों, जिनका आयात किया गया है, के संबंध में अलग-अलग सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण किया है और इनकी तुलना की है। बिक्री के नियमों एवं शर्तों में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। दोनों कीमतें करों से मुक्त हैं। इस प्रकार प्राधिकारी मानते हैं कि की गई तुलना उचित तुलना है। जैसाकि ऊपर ब्योरा दिया गया है निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है, जो इस प्रकार है :-

	पाटन मार्जिन %
चीन	131
थाईलैंड	229

छ. घरेलू उद्योग को हुई क्षति

संचयी आकलन

38. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध -II (iii) में व्यवस्था है कि यदि एक से अधिक देशों से किसी उत्पाद के आयात एक साथ पाटनरोधी जाँच के अधीन रखे जाते हैं तो प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेंगे, यदि यह निर्धारित होता हो कि:-

प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत रूप में दो प्रतिशत से अधिक या प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का तीन प्रतिशत हो या जहाँ अलग-अलग देशों से निर्यात तीन प्रतिशत से कम है, आयात संचयी रूप से समान वस्तु के आयातों के सात प्रतिशत से अधिक हो, और;

(ख) आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के आलोक में करना उचित है।

39. प्राधिकारी ने यह विचार किया कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी मूल्यांकन करना उचित होगा। जैसाकि नीचे बताया गया है चीन और थाइलैंड से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी मूल्यांकन करना उपयुक्त होगा:-

- (i) संबद्ध देशों में से प्रत्येक का पाटन मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है;
- (ii) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयातों की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है;
- (iii) संचयी मूल्यांकन निम्नलिखित कारकों के मद्देनजर उचित है:-

- (क) शामिल वस्तुएं समान वस्तुएं हैं और वे एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रही हैं;
- (ख) आयातित उत्पादों को वितरण की समान श्रृंखला के जरिए और ग्राहकों की तुलनीय श्रेणी को बेचा जा रहा है;
- (ग) दोनों देशों के उत्पाद बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं;
- (घ) दोनों देशों से आयातों में वृद्धि हो रही है।

बाजार का विभाजन

40. घरेलू टायर बाजार कई खण्डों अर्थात् ओईएम बाजार (मूल उपकरण विनिर्माता), विस्थापन बाजार या ऑफ्टर मार्केट और ऐसे अन्य खण्ड में विभाजित है जिसमें सरकार क्षेत्र को होने वाली आपूर्तियाँ शामिल हैं। आवेदकों ने तर्क दिया है कि ऑटोमोबाइल बाजार में भारी तेजी आई थी जिससे ओईएम बाजार में विचाराधीन उत्पाद की मांग में अत्यधिक वृद्धि हुई थी और परिणामतः ओईएम खण्ड में बिक्री में वृद्धि हुई थी जैसाकि भारतीय उद्योग के बारे में निम्नलिखित समेकित स्थिति से देखा जा सकता है :-

		2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
ओईएम	संख्या	632763	823756	1457545	1790062
	सूचीबद्ध	100	130.18	230.35	282.90
विस्थापन बाजार	संख्या	5823153	6567005	6741534	6518483
	सूचीबद्ध	100	112.77	115.77	111.94
अन्य	संख्या	179100	176400	175500	174600
	सूचीबद्ध	100	98.49	97.99	97.49

प्रतिनिधिक आयातक एसोसिएशन ने भी यह तर्क दिया है कि विस्थापन बाजार ही एकमात्र ऐसा बाजार है जो अपने उत्पाद की आपूर्ति कर रहा है और वह ओईएम बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहा है। उपर्युक्त के मध्यनजर मांग एवं मात्रात्मक प्रभाव के मूल्यांकन पर विस्थापन बाजार खण्ड के लिए ही विचार किया गया है।

माँग का आकलन

41. प्राधिकारी ने वर्तमान याचिका के प्रयोजनार्थ देश में उत्पाद की माँग या खपत को विस्थापन बाजार में भारतीय उत्पादों की कुल घरेलू बिक्रियों और सभी स्रोतों से आयात के जोड़ के रूप में परिभाषित किया है। इस प्रकार आकलित माँग निम्नांकित तालिका में दी गई है :-

स्रोत	इकाइयाँ	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिकृत
आयात					
आयात (संबद्ध देश)	संख्या	3589	16755	77538	173481
आयात (अन्य)	संख्या	8	14378	8697	10056
विस्थापन बाजार में भारतीय उत्पादकों द्वारा बिक्री	संख्या	5823153	6567005	6741534	6518483
विस्थापन बाजार में कुल माँग	संख्या	5826750	6598138	6827769	6702020

आयात मात्राएं एवं बाजार हिस्सा

42. संबद्ध देश से संबद्ध उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा और भारत में विस्थापन बाजार में बिक्री की दृष्टि से इनका हिस्सा नीचे तालिका में दिया गया है :-

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिकृत
आयात					
चीन	संख्या	3589	16509	72474	161991
थाइलैंड	संख्या		246	5064	11490
कुल	संख्या	3589	16755	77538	173481
बाजार हिस्सा					
घरेलू उत्पादक	%	99.94	99.53	98.74	97.26
संबद्ध देश	%	0.06	0.25	1.14	2.59
अन्य देश	%	0.00	0.22	0.13	0.15
कुल	%	100	100	100	100

43. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों में इस अवधि के दौरान समग्र रूप से और भारत में आयातों तथा भारत में विस्थापन बाजार में बिक्री और भारत में खपत के संबंध में वृद्धि हुई है।

44. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि संबद्ध देश से आयातों में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि प्रदर्शित हुई है जिसके परिणामस्वरूप पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और आधार वर्ष 2001-2002 की तुलना में जाँच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कमी आई है। प्राधिकारी का अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष है कि पाटित आयातों का प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव पड़ा है।

आयातों का कीमत प्रभाव

45. घरेलू उद्योग की निवल कीमत प्राप्तियों की गणना करें और शुल्कों को छोड़कर बिक्री कीमत पर विचार करते हुए की गई है। आयातों की पहुँच कीमत का निर्धारण 1% पहुँच प्रभार और अनुप्रयोज्य मूल सीमाशुल्क के साथ भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत पर विचार करते हुए किया गया है। विभिन्न कीमतों की प्रवृत्ति निम्नांकित तालिका में दी गई है :-

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिकृत
सीआईएफ निर्यात कीमत					
चीन	रू./सेट	2413.97	1758.65	1723.07	2000.39
थाइलैंड	रू./सेट	1707.40	1671.75	1591.33	1849.99
संबद्ध देश	रू./सेट	2413.97	1757.47	1719.19	1992.18
पहुँच मूल्य					
चीन	रू./सेट	3145.40	2291.52	2071.14	2364.06
थाइलैंड	रू./सेट		2224.75	2009.45	2186.32
संबद्ध देश	रू./सेट	3145.40	2289.98	2066.47	2354.36
उत्पादन लागत	सूचीबद्ध	100	99.53	105.27	112.26
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	सूचीबद्ध	100	101.19	104.80	111.56
कीमत कटौती					
चीन	% रेंज	40-50	50-60	60-70	60-70
थाइलैंड	% रेंज		50-60	60-70	60-70
संबद्ध देश	% रेंज	40-50	50-60	60-70	60-70

46. यह नोट किया जाता है कि:-

(क) चीन से सीआईएफ निर्यात कीमत में आधार वर्ष अर्थात् 2001-2002 की तुलना में गिरावट प्रदर्शित हुई है। तथापि जाँच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान कीमत में वृद्धि हुई थी। थाइलैंड की कीमत में वृद्धि हुई है लेकिन ये कीमतें चीन की कीमतों से भी कम रही हैं।

(ख) चीन और थाइलैंड से आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से काफी कम जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई है।

(ग) आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास हो रहा है और इनसे वे कीमत वृद्धियाँ नहीं हो पा रही हैं जो अन्यथा आयातों की अनुपस्थिति में हुई होती।

47. उपर्युक्त विचार करते हुए, प्राधिकारी का अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का प्रभाव मात्रा और कीमत की दृष्टि से प्रतिकूल रहा है।

घरेलू उद्योग के आर्थिक मानदंड

48. संबद्ध देशों से संबद्ध उत्पाद का पाटन वर्ष 2003-2004 में और जाँच अवधि के दौरान काफी अधिक हो गया। आधार वर्ष अर्थात् 2001-2002 और केवल जाँच अवधि में भिन्न-भिन्न मानदण्डों की तुलना से घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का वास्तविक प्रभाव प्रदर्शित नहीं होता है। आटोमोबाइल उत्पादन में जबरदस्त उछाल और घरेलू उद्योग पर उसके परिणामी प्रभाव को देखते हुए, आवेदकों का दावा है कि घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन से संबंधित कुछेक मापदंडों में इस अवधि के दौरान बाजार विकास को दर्शाने हेतु वृद्धि हुई है। आवेदकों द्वारा यह दवा किया गया है कि किसी इकाई द्वारा आटोमोबाइल उत्पादन में वृद्धि से संबद्ध वस्तु की बिक्री में 7 से 23 यूनिटों के बीच वृद्धि हो जाती है। अतः उत्पाद की माँग में अत्यधिक उछाल को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के निष्पादन की जाँच वर्ष-दर-वर्ष आधार पर करना उचित है।

49. बिक्री, लाभ, उत्पादन का बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेशों पर आय या क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव, वस्तु सूचियाँ, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता में वास्तविक एवं संभावित गिरावट की दृष्टि से उद्योग की स्थिति के आकलन के लिए सभी संगत आर्थिक कारकों के मूल्यांकन पर निम्नांकित ढंग से विचार किया गया है।

उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग

50. इन वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग के वास्तविक उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग निम्नांकित तालिका में यथा प्रदर्शित थे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन हेतु क्षमता का उपयोग अन्य प्रकार के टायरों के उत्पादन में भी हो सकता है। अतः केवल विचाराधीन उत्पाद पर विचार करके क्षमता एवं क्षमता उपयोग का निर्धारण करना उचित नहीं है। प्राधिकारी ने क्षमता एवं क्षमता उपयोग का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-11 के उपबंधों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विभिन्न प्रकार के टायरों पर जिनके लिए क्षमता का एक-दूसरे के लिए प्रयोग किया जा सकता है, विचार करते हुए किया है।

प्रवृत्ति	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिकृत
संयंत्र की क्षमता	सं.	12554305	13133648	14078159	16802293
	सूचीबद्ध	100	104.61	112.14	135.80
गैर-संबद्ध वस्तु समेत सभी प्रकार के टायरों का उत्पाद	सं.	9239853	11871471	13431187	15005212
	सूचीबद्ध	100	128.48	145.36	162.40
संयंत्र का उपयोग	%	78.60	90.39	95.40	89.30
	सूचीबद्ध	100.00	115.00	121.38	113.62
संबद्ध वस्तु का उत्पादन	सं.	6242468	7218501	7987559	8171154
	सूचीबद्ध	100	115.64	127.96	130.90
बिक्रिया	सं०	5065878	5757989	6272224	6447173
	सूचीबद्ध	100	113.66	123.81	127.27
वस्तु सूचियाँ	सं०	213309	203028	318699	343584
	सूचीबद्ध	100	95.18	149.41	161.07

प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

(क) अवधि के दौरान संयंत्र क्षमता, उत्पादन बिक्री एवं संयंत्र उपयोगिता में क्रमशः 35.80%, 30.90%, 27.27%, और 13.62% की वृद्धि प्रदर्शित हुई।

(ख) क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में वृद्धि हुई। तथापि, क्षमता उपयोग में वृद्धि होने के पश्चात गिरावट आई है।

(ग) यद्यपि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में हुए उत्पादन और बिक्री में वृद्धि प्रदर्शित हुई है तथापि वह बाजार वृद्धि से कम रही है जिसके परिणामस्वरूप भण्डारसूची में वृद्धि और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि में बाजार हिस्सा गंदाया है।

(घ) अन्य प्रकार के टायरों का उत्पादन में वृद्धि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि से अधिक है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग ने गैर संबद्ध वस्तुओं के लिए क्षमताओं का अधिक उपयोग किया है।

लाभ और निवेश पर आय

51. वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग का लाभ और निवेश पर आय निम्नानुसार रही है :-

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि वार्षिक
बिक्री कीमत	सूचीबद्ध	100	101.19	104.80	111.56
उत्पादन लागत	सूचीबद्ध	100	99.53	105.27	112.26
प्रति इकाई लाभ/हानि	सूचीबद्ध	100	140.88	93.52	94.72
लगाई गई पूंजी पर आय	%	15.63	15.08	10.49	11.45
	सूचीबद्ध	100	96	67	73.29

यह देखा गया है कि :-

(क) जांच अवधि तक घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और उत्पादन लागत में वृद्धि हुई थी। तथापि वर्ष 2002-2003 में हुई लागत वृद्धि की तुलना में घरेलू उद्योग वस्तुतः अपनी कीमतें बढ़ाने में सफल रहा था। तत्पश्चात घरेलू उद्योग के समक्ष ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी जहां लागत वृद्धि, कीमत वृद्धि से अधिक हो गई थी।

(ख) यद्यपि वर्ष 2001-2002 और वर्ष 2002-2003 के बीच घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में सुधार आया था तथापि, बाद में उसमें गिरावट प्रदर्शित हुई थी। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की प्रति इकाई लाभप्रदता, बिक्री मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद वर्ष 2002-2003 के स्तर से काफी कम रही थी।

(ग) क्षति अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट प्रदर्शित हुई थी। अतः उच्च उत्पादन और बिक्री मात्रा के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को आय में केवल गिरावट आई थी।

भारतीय उद्योग के बाजार हिस्से में परिवर्तन

52. प्रतिस्थापन बिक्री में भारतीय उद्योग और आयातों के बाजार हिस्से नीचे तालिका में दिए गए हैं :-

भारत में संबद्ध वस्तुओं की प्रतिस्थापन बिक्री में बाजार हिस्सा					
	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
घरेलू उत्पादक	%	99.94	99.53	98.74	97.26
संबद्ध देश	%	0.06	0.25	1.14	2.59
अन्य देश	%	0.00	0.22	0.13	0.15
कुल	%	100	100	100	100

उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि;

(क) घरेलू प्रतिस्थापन बाजार बिक्री में घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई थी।

(ख) पाटित आयातों का बाजार हिस्सा जो वर्ष 2001-2002 की अवधि के दौरान 0.06% पर नगण्य था, वह जाँच अवधि के दौरान 2.59% के उल्लेखनीय स्तर पर पहुँच गया था।

(ग) पाटित आयातों के हिस्से में वृद्धि और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से के नुकसान के बीच सहसम्बन्ध है।

रोजगार

53. घरेलू उद्योग की रोजगार स्थिति का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है :-

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
कर्मचारियों की सं.	संख्या	15521	17839	18232	18274
सूचीबद्ध		100	115	117	118
प्रति एक लाख संख्या क्षमता पर व्यक्तियों की संख्या	संख्या	123.63	135.83	129.51	108.76

यह देखा गया है कि :-

(क) घरेलू उद्योग के कामगारों की संख्या में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

(ख) कामगारों की संख्या में वृद्धि का कारण क्षमता और उत्पादन में वृद्धि होना है।

(ग) क्षति अवधि के दौरान प्रति एक लाख टायर की क्षमता पर उद्योग द्वारा काम पर रखे गए व्यक्तियों की संख्या में गिरावट आई थी। अतः रोजगार में वृद्धि, क्षमता में वृद्धि के अनुपात में नहीं है।

वेतन

54. वेतन और उत्पादन लागत पर उसका प्रभाव नीचे तालिका में दिया गया है :-

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
वेतन	लाख रूपए	9140	13189	14424	14743
	सूचीबद्ध	100	144	157	161
प्रति इकाई उत्पादन परिवर्तन	रू./सेट	200	230	231	229
	सूचीबद्ध	100	115	115	114

(क) यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान वेतन में वृद्धि हुई है।

(ख) वेतन लागत वृद्धि से सामान्य वेतन में वृद्धि और रोजगार स्तर में हुई वृद्धि के कारण होने वाली वृद्धि प्रदर्शित होती हैं।

उत्पादकता

55. अवधियों के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता, नीचे तालिका में दी गई है -

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
उत्पादकता	संख्या	351	404	438	447
	सूचीबद्ध	100	114.98	124.49	127.06
कर्मचारियों की संख्या	सूचीबद्ध	100	114.93	117.47	118
उत्पादन	सूचीबद्ध	100	115.64	127.96	130.90

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है। तथापि उत्पादकता में वृद्धि के बावजूद, घरेलू उद्योग के लाभों में सुधार के पश्चात गिरावट प्रदर्शित हुई है।

घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक

57. संबद्ध देशों से आयातों के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हो रही है। आयातों की पहुँच कीमत, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और क्षतिरहित कीमत से काफी कम है। इस संबंध में स्थिति निम्नानुसार है :-

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
कीमत कटौती					
चीन	% रेंज	40-50	50-60	60-70	60-70
थाईलैण्ड	% रेंज		50-60	60-70	60-70
संबद्ध देश	% रेंज	40-50	50-60	60-70	60-70

58. प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत की तुलना, आयातों की पहुँच कीमत के साथ करके कम कीमत पर बिक्री की सीमा का निर्धारण किया है। यह तुलना निम्नानुसार है :-

	जाँच अवधि के दौरान रेंज
चीन	60-70
थाईलैण्ड	60-70
संबद्ध देश	60-70

यह नोट किया गया है कि :-

(क) चीन और थाईलैण्ड से आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अत्यधिक कम है जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती हो रही है।

(ख) चीन और थाईलैण्ड से आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से काफी कम है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हो रही है।

(ग) आयातों के कारण बाजार में कीमतों का ह्रास हो रहा है, क्योंकि आयातों के कारण कीमत वृद्धि को लागत वृद्धि के समनुरूप करने में रुकावट आ रही है।

भण्डार सूची

59. घरेलू उद्योग की तैयार वस्तुओं की भण्डार सूची से निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है :-

प्रवृत्ति	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
भण्डार सूची	संख्या	213309	203028	318699	343584
	सूचीबद्ध	100	95.18	149.41	161.07

60. यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग की भण्डार सूची में अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। भण्डार सूची में यह वृद्धि क्षमता उपयोग में गिरावट के बावजूद हुई है।

निवेश जुटाने की क्षमता

61. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि यदि पाटन लगातार जारी रहा तो, पूंजी एकत्र करने में कठिनाई आएगी, जो विशेष रूप से उस स्थिति में काफी महत्वपूर्ण होता है जहाँ घरेलू उद्योग के संघटक महत्वपूर्ण निवेश करने की योजना बना रहे हों।

नकद प्रवाह

62. घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह और नकद लाभ स्थिति में निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई थी :-

	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
नकद लाभ प्रति इकाई बिक्री पर	प्रवृत्ति	100.00	130.05	95.93	95.29

63. प्रति इकाई बिक्री नकद लाभों में वर्ष 2002-2003 तक वृद्धि हुई और तत्पश्चात उसमें गिरावट आई जो वर्ष 2001-2002 के दौरान प्राप्त किए गए स्तर से भी कम थी ।

वृद्धि

64. विभिन्न मानदण्डों के आधार पर घरेलू उद्योग की वृद्धि का विश्लेषण किया गया था और पाया गया कि प्रवृत्तियां निम्नानुसार है :-

स्रोत	इकाई	2002-03	2003-04	जाँच अवधि वार्षिक
बिक्री मात्रा में वृद्धि	%	13.66	8.93	2.79
इकाई बिक्री कीमत में वृद्धि	%	1.19	3.57	6.45
उत्पादन लागत में वृद्धि	%	-0.47	5.77	6.64
उत्पादन में वृद्धि	%	15.64	10.65	2.30
लाभ में वृद्धि (पीबीटी प्रति इकाई)	%	40.88	-33.61	1.28

65. कीमत मानदण्डों के संदर्भ में घरेलू उद्योग नकारात्मक वृद्धि का सामना कर रहा है । यद्यपि उत्पादन और बिक्री मात्रा जैसे मात्रा संबंधी मानदण्डों से सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है, यह पाया गया है कि वृद्धि दर में गिरावट आ रही है ।

क्षति का आकलन

66. विभिन्न क्षति मानदण्डों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि :-

(क) संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र अर्थों में तथा भारत में संबद्ध वस्तु के कुल आयातों, उत्पादन और मांग में भी वृद्धि हुई है । परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है ।

(ख) आयातों के कारण अत्यधिक कीमत कटौती हो रही है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग पर कीमत ह्रासकारी प्रभाव पड़ रहा है ।

(ग) यद्यपि, घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है तथापि क्षमता उपयोग में सुधार के पश्चात गिरावट प्रदर्शित हुई है, जबकि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है ।

(घ) उत्पादन और बिक्री में वृद्धि के बावजूद, प्रति इकाई बिक्री पर घरेलू उद्योग के लाभों में वर्ष 2002-2003 में वृद्धि के पश्चात गिरावट आई है । लाभ में गिरावट के परिणामस्वरूप नकद लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट आई है ।

(ङ.) बाजार हिस्से में गिरावट के परिणामस्वरूप कम क्षमता उपयोग के बावजूद घरेलू उद्योग की भण्डार सूचियों में वृद्धि हुई है ।

69. प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न मानदण्डों से सामूहिक और संचयी रूप से यह निर्धारित होता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

घरेलू उद्योग को क्षति के विरोध में तर्क

70. प्रयोक्ताओं और आयातकों की उत्तर देने वाली एसोसिएशनों द्वारा निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए गए हैं, जिसमें यह कहा गया है कि घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई है :-

(क) यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की वास्तविक क्षति नहीं हुई है। यह भी तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई विभिन्न सूचनाओं की पर्याप्तता और सत्यता की जांच नहीं की गई थी और प्राधिकारी ने जांच शुरू करते समय नियम 5 का उल्लंघन किया था। घरेलू उद्योग के लगभग सभी मानदण्डों में सुधार प्रदर्शित होता है। वर्षों के दौरान संबद्ध देश से आयात अत्यंत मामूली रहे हैं।

(ख) याचिकाकर्ता में जानबूझकर 15 महीने की जांच अवधि ठहराई है जिसमें दो व्यस्ततम काल शामिल हैं। यह निवेदन स्वयं घरेलू उद्योग द्वारा किया गया था कि फरवरी और जून माह के बीच की अवधि में उत्पाद की अधिकतम खपत होती है। इन अवधियों के दौरान की स्थितियों को जांच में शामिल किया गया है और पूर्णतः गलत अनुमानों के निर्धारण हेतु उन्हें वार्षिकीकृत किया गया है।

(ग) ओईएम खण्ड और आफ्टर मार्केट के लिए उत्पादों का विभेदीकरण किया जाना आवश्यक है, चूंकि ओईएम खण्ड के उत्पाद, आफ्टर मार्केट के उत्पादों से पूर्णतया अलग हैं। संभवतः उत्पाद में इस प्रकार की भिन्नता के कारण ही याचिकाकर्ता, जेके टायर संबंधी आंकड़ों को याचिका में शामिल नहीं कर सके, क्योंकि यह कम्पनी मुख्यतः ओईएम खण्ड में अपनी बिक्री करती है।

(घ) गुणवत्ता के संदर्भ में संबद्ध देशों से आयातित टायर की तुलना घरेलू उत्पादों से नहीं की जा सकती है क्योंकि आयातित उत्पाद खराब गुणवत्ता वाले होते हैं और किसी भी तरह से घरेलू उत्पाद से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते हैं। अतः संबद्ध देशों से आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई हो, के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

(ड.) घरेलू उत्पादकों के बीच किसी प्रकार की कड़ी प्रतिस्पर्धा नहीं है।

(च) अन्य देशों में आमूल परिवर्तन से बायस टायरों के घरेलू उत्पादकों को अच्छे निर्यात अवसर प्राप्त हुए हैं। टायर उद्योग के उत्पादन में वृद्धि, बस और ट्रक खण्ड के अनुरूप नहीं हो पाई है। टायर निर्यात की वृद्धि दर वर्ष 2004-2005 में स्थिर बनी रही और अब उसमें वृद्धि हो रही है। निर्यातों में वृद्धि के कारण घरेलू ओईएम और रिप्लेसमेंट बाजारों के लिए टायरों की उपलब्धता में कमी आ रही है।

(छ) टायर विनिर्माताओं ने पिछले दो वर्षों के दौरान टाटा मोटर्स के साथ पांच कीमत वृद्धियों का सहारा लिया है। समयानुवर्ती कीमत निर्धारण को बड़ी वृद्धि का कारण माना जा सकता है। इसके अलावा मै0 टाटा मोटर्स को घरेलू उद्योग की ओर से होने वाली आपूर्ति अनियमित रही है।

(ज) ट्रक टायर की कीमत का देश में वस्तुओं के संचलन पर प्रभाव पड़ता है। चूँक ट्रक परिवहन एक प्रमुख परिवहन प्रणाली है इसलिए यह आवश्यक है कि वस्तुओं की कीमत को उचित रखने के लिए उसे सस्ता रखा जाए। डीजल के पश्चात, टायर की लागत, वाहकों के लिए सबसे अधिक लागत वाला संघटक है।

(झ) याचिकाकर्ताओं ने किसी सोच विचार के बिना सभी सूचनाओं को गोपनीयता का दावा किया है। याचिकाकर्ता ने लागत संबंधी सूचना का सूचीबद्ध रूपान्तर उपलब्ध नहीं कराया है। याचिकाकर्ताओं ने खरीद नीति, बिक्री नीति, भण्डार लेखों, गुणवत्ता नियंत्रण और जांच जैसे कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को अपनी याचिका में अनदेखा कर दिया है।

(ञ) भारतीय उत्पादकों को हुई किसी प्रकार की वास्तविक क्षति विदित नहीं है।

(ट) भारत के लिए कोई विभेदकारी कीमत नहीं है क्योंकि विदेशी निर्यातक उसी कीमत पर अन्य तीसरे देशों को निर्यात कर रहे हैं।

(ठ) अपोलो का खण्डवार परिणाम, प्रपत्र IV -क से स्पष्टता विपरीत है। वर्ष 2004-2005 के अपोलो की वार्षिक रिपोर्ट में उत्पाद की मांग में गिरावट का उल्लेख है जबकि प्रपत्र में मांग में वृद्धि दर्शाई गई है।

(ड.) अपोलो के लिए किसी प्रकार का कीमत हास नहीं हुआ है। घरेलू उद्योग ने लागत वृद्धि का बोझ ग्राहकों पर डाल दिया है।

(न) समर्थनकर्ताओं द्वारा प्रदान की गई क्षति संबंधी सूचनाओं की जांच भी प्राधिकारी द्वारा की जानी चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

70. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत इन निवेदनों की जांच की है और उनका मानना है कि:-

(क) जांच से पूर्व सत्यता और औचित्य हेतु याचिका की जांच की गई थी। यह निर्धारित हो जाने के पश्चात ही कि घरेलू उद्योग को प्रथम दृष्टया क्षति पहुँची है, जांच की शुरुआत की गई थी।

(ख) संबद्ध उत्पाद के मामले में घरेलू उद्योग को क्षति से संबंधित विभिन्न क्षति संबंधी मापदण्ड स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों से पाटन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

(ग) यह सत्य है कि आयात मुख्य रूप से बाजार पश्चात घटक में हो रहे हैं। तथापि, इससे क्षति विश्लेषण विकृत नहीं हुआ है। इसके विपरीत, यदि केवल बाजार पश्चात की घरेलू उद्योग की मात्रा को लिया जाएगा तो वह मात्रा तथा कीमत दोनों रूपों में घरेलू उद्योग को अधिक मात्रा में हुई क्षति को दर्शाएगी।

(घ) यह स्थापित नहीं किया गया है कि आयातित उत्पाद और घरेलू उत्पाद की गुणवत्ताएँ इतनी भिन्न हैं कि घरेलू उत्पाद आयातित उत्पाद के समान वस्तु नहीं है। साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है तथापि आयात में वृद्धि हुई है।

(ङ) विचार की गई जाँच अवधि कानूनी प्रावधानों के संगत नहीं है। किसी भी मामले में दो सर्वोत्तम मौसमों को शामिल करने से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की सीमा प्रदर्शित हुई है।

(च) उत्पाद में या ओईएम घटक तथा बाजार पश्चात घटक के लिए फैक्टरी उत्पादन लागत में कोई अंतर नहीं है।

(छ) भारतीय उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की उपस्थिति का अर्थ पाटित आयातों से कोई क्षति न होना नहीं है। आंतरिक प्रतिस्पर्धा के बावजूद घरेलू उद्योग वर्ष 2001-2002 और 2002-2003 के बीच सुधार लाने में सफल रहा था। वर्ष 2003-2004 जब बाजार में आयात होना शुरू हो गया, तब से स्थिति खराब होनी शुरू हो गई। जाँच अवधि में जब पाटित आयातों में वृद्धि हुई, तब लाभप्रदता में और गिरावट आई।

(ज) यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वृद्धि प्रदर्शित हुई है। तथापि, यह देखते हुए कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई थी, किसी साक्ष्य की अनुपस्थिति में यह स्थापित नहीं किया जा सकता है कि मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग अपना उत्पादन बढ़ाने में समर्थ नहीं था - (वस्तुतः यह पाया गया है कि आयात प्रमुख रूप से बाजार पश्चात में होते हैं और समग्र ओईएम मांग की पूर्ति भारतीय उत्पादकों द्वारा की जाती है) या बाजार में उत्पाद की उपलब्धता में कमी आई थी। घरेलू उद्योग की माल सूची में वस्तुतः वृद्धि हुई है।

(झ) यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग ने अपनी कीमत में वृद्धि की है। तथापि, यह पाया गया है कि बिक्री कीमत में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है जो स्पष्ट रूप से यह स्थापित करती है कि कीमत में वृद्धि की तुलना में लागत में वृद्धि अधिक थी।

(ञ) अनियमित आपूर्ति संबंधी तर्क को साक्ष्य से स्थापित नहीं किया गया है।

(ट) पूर्व में उत्पाद के आयात नगण्य थे । इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी शुल्क के बेंचमार्क रूप की सिफारिश की जा रही है, जो यह सुनिश्चित करेगा कि उत्पाद की कीमत अनुचित नहीं होगी ।

(ठ) आवेदक ने गोपनीयता के दावे के लिए स्पष्टीकरण दिया है जिसकी प्राधिकारी द्वारा जाँच की गई थी और यह पाया गया था कि आवेदक ने नियमों के अनुरूप गोपनीयता का दावा किया है ।

(ड) जब कि टायर कम्पनियों ने बाजार से वस्तुओं को खरीदा है । तथापि, यह स्थापित नहीं है कि ये क्रय आयातित वस्तुओं का था ।

(ढ) घरेलू उद्योग को क्षति को "समग्र रूप में घरेलू उद्योग के लिए" और न कि अलग-अलग कम्पनियों के लिए देखा जाना अपेक्षित है । समग्र रूप में घरेलू उद्योग के आँकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से क्षति हुई है ।

ज. कारणात्मक संबंध और अन्य कारकों का विश्लेषण

71. प्राधिकारी ने यह जाँच की कि क्या अन्य मापदण्डों से भी घरेलू उद्योग को क्षति हुई है । निम्नलिखित मापदण्डों का विश्लेषण किया गया था :-

(क) तीसरे देशों से आयात - अन्य देशों से संबद्ध उत्पाद का आयात या तो नगण्य (न्यूनतम से कम) है अथवा निर्यात कीमत बहुत अधिक है । अन्य देशों से आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति प्रतीत नहीं होती है ।

(ख) माँग में कमी - संबद्ध वस्तु की माँग में वृद्धि हुई है । मात्रा में संभावित कमी से घरेलू उद्योग को क्षति प्रतीत नहीं होती है ।

(ग) खपत का पैटर्न - खपत के पैटर्न में किसी विशेष अंतर को नोटिस नहीं किया गया है । घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए उत्पाद की सीधी प्रतिस्पर्धा संबद्ध देशों से आयातित वस्तु के साथ हो रही है । विचाराधीन उत्पाद की माँग में वृद्धि प्रदर्शित हुई है और ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि खपत के पैटर्न से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है ।

(घ) प्रतिस्पर्धा की स्थितियाँ- प्रतिस्पर्धा की स्थितियों या व्यापार बाधक प्रथाओं से घरेलू उद्योग की क्षति होने का कोई साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है ।

(ङ.) प्रौद्योगिकी विकास - क्षति अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में कोई ऐसा विशेष परिवर्तन प्रतीत नहीं होता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो और न ही प्रौद्योगिकी विकास के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कोई साक्ष्य प्राधिकारी के नोटिस में लाया गया है ।

(च) **घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन** - आवेदक के निर्यात निष्पादन में कोई गिरावट नहीं आई है। वस्तुतः घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में वृद्धि प्रदर्शित हुई है। लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग को निर्यात निष्पादन बँटा हुआ है और घरेलू बाजार में संबंधित उत्पाद के लिए क्षति का आकलन करते समय केवल घरेलू निष्पादन पर विचार किया गया है।

(छ) **उत्पादकता** - उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। अतः उत्पादकता में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग की क्षति का संभव कारण नहीं है।

कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

72. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन का विश्लेषण यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है। इसे निम्नलिखित द्वारा स्थापित किया गया है :-

(क) संबद्ध देशों से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और उत्पादन लागत से बहुत कम था जिससे अत्यधिक कीमत कटौती हुई। प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में घरेलू उद्योग लागत वृद्धि की सीमा तक बिक्री प्राप्ति में असमर्थ था। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग को कीमत ह्रास का सामना करना पड़ा है।

(ख) घरेलू उद्योग द्वारा सामना की गई सकारात्मक कीमत कटौती और अनुवर्ती कीमत ह्रास का परिणाम लाभ नकद प्रवाह और निवेश पर आय में गिरावट के रूप में हुआ।

(ग) अत्यधिक सकारात्मक कीमत कटौती का परिणाम संबद्ध देशों से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के रूप में हुआ। इसके सीधे परिणाम के रूप में जहाँ भारत में माँग में पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई, वहीं घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई।

(घ) अत्यधिक कीमत कटौती की उपस्थिति और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अनुवर्ती गिरावट का परिणाम एक ऐसी स्थिति के रूप में हुआ जहाँ अधिक बाजार माँग के बावजूद घरेलू उद्योग अपनी बिक्री और उत्पादन मात्रा बढ़ाने में असमर्थ था। परिणामस्वरूप, क्षमता उपयोग भी प्रभावित हुआ।

73. अतः प्राधिकारी अनन्तिम रूप से यह मानते हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों से घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है।

झ. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

74. प्रयोक्ताओं द्वारा यह तर्क दिया गया है कि ट्रक परिवहन देश के वाणिज्य तथा संभार तंत्र और वस्तु आवागमन के लिए जीवन आधार के रूप में कार्य करता है। टायर की कीमत का देश में वस्तुओं के आवागमन तथा उनकी कीमत पर प्रभाव पड़ा है। अतः वस्तुओं की कीमत को क़िफायती सीमा में

रखने के लिए परिवहन की पद्धति को सरता रखना आवश्यक है। किसी ट्रक प्रचालक के लिए व्यय के रूप में टायर की कीमतें डीजल के बाद दूसरे स्थान पर आती हैं।

75. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आम तौर पर पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारत में मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित किया जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण के उपायों से किसी भी प्रकार से संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अ. निष्कर्ष

76. उपर्युक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि:-

- (क) संबद्ध देशों से भारत में संबद्ध वस्तु का निर्यात सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;
- (ख) घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है;
- (ग) संबद्ध देशों से पाटित आयातों से क्षति हुई है।

ट. सिफारिशें

77. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच प्रारंभ की गई थी और सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था और पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराने के लिए निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। निर्धारित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति तथा उन दोनों के बीच कारणात्मक संबंध के बारे में पाटनरोधी जाँच प्रारंभ करने और प्रारंभिक जाँच करने तथा संबद्ध देशों के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन के साथ-साथ ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई आर्थिक क्षति को स्थापित करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि जाँच के पूरा होने तक पाटन तथा परिणामी क्षति को हतोत्साहित करने के लिए अनन्तिम शुल्क का अधिरोपण अपेक्षित है।

78. अतः प्राधिकारी इसे आवश्यक मानते हैं और नीचे दिए गए रूप और पद्धति में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हैं।

79. कम शुल्क के नियम का ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन में से जो कम हो, उसके समतुल्य अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त हो सके। तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और आयातों के पहुंच मूल्य के बीच अंतर के बराबर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लागू होगा।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद	वस्तु विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यातक उत्पादक देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	40131020	बसों व लॉरियों के लिए खड़ की आंतरिक ट्यूब	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	6.98	प्रति नग	अ.डॉ.
2.	40129049	बसों व लॉरियों के लिए खड़ के टायर फ्लैप्स	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	3.50	प्रति नग	अ.डॉ.
3.	40112090	16 से अधिक मामूली रिम व्यास कोड वाले खड़ के नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक बायस टायर्स	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	कोई भी	88.82	प्रति नग	अ.डॉ.
4.	40131020	बसों व लॉरियों के लिए खड़ की आंतरिक ट्यूब	कोई भी	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	6.98	प्रति नग	अ.डॉ.
5.	40129049	बसों व लॉरियों के लिए खड़ के टायर फ्लैप्स	कोई भी	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	3.50	प्रति नग	अ.डॉ.
6.	40112090	16 से अधिक मामूली रिम व्यास कोड वाले खड़ के नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक बायस टायर्स	कोई भी	कोई भी	चीन जन. गण.	कोई भी	कोई भी	88.82	प्रति नग	अ.डॉ.
7.	40131020	बसों व लॉरियों के लिए खड़ की आंतरिक ट्यूब	कोई भी	थाईलैंड	कोई भी	कोई भी	कोई भी	8.50	प्रति नग	अ.डॉ.
8.	40129049	बसों व लॉरियों के लिए खड़ के टायर फ्लैप्स	कोई भी	थाईलैंड	कोई भी	कोई भी	कोई भी	4.26	प्रति नग	अ.डॉ.
9.	40112090	16 से अधिक मामूली रिम व्यास कोड वाले खड़ के नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक बायस टायर्स	कोई भी	थाईलैंड	कोई भी	कोई भी	कोई भी	108.27	प्रति नग	अ.डॉ.
10.	40131020	बसों व लॉरियों के लिए खड़ की आंतरिक ट्यूब	कोई भी	कोई भी	थाईलैंड	कोई भी	कोई भी	8.50	प्रति नग	अ.डॉ.
11.	40129049	बसों व लॉरियों के लिए खड़ के टायर फ्लैप्स	कोई भी	कोई भी	थाईलैंड	कोई भी	कोई भी	4.26	प्रति नग	अ.डॉ.
12.	40112090	16 से अधिक मामूली रिम व्यास कोड वाले खड़ के नए/अप्रयुक्त न्यूमैटिक बायस टायर्स	कोई भी	कोई भी	थाईलैंड	कोई भी	कोई भी	108.27	प्रति नग	अ.डॉ.

80. टायरों, ट्यूबों तथा फ्लैप्स के सम्मिश्रण वाले आयातों के लिए संदर्भ कीमत सम्मिश्रण के भागों के संदर्भ कीमत का योग होगी। उदाहरणार्थ, चीन से टायर, ट्यूब एवं फ्लैप (टीटीएफ) के एक सेट के आयात के मामले में संदर्भ कीमत टायर, ट्यूब एवं फ्लैप की संदर्भ कीमतों अर्थात् 88.82, 6.98 और 3.50 अमरीकी डॉलर का योग अर्थात् 99.30 अमरीकी डॉलर होगी।

ठ. आगे की प्रक्रियाएँ

81. प्रारंभिक जाँच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया जाएगा:-

(क) प्राधिकारी इन जाँच परिणामों पर सभी हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियाँ आमंत्रित करेंगे और अंतिम जाँच परिणामों में उन पर विचार-विमर्श किया जाएगा;

(ख) ज्ञात संबंधित निर्यातकों, आयातकों, आवेदकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो पत्र के जारी होने की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। इस जाँच परिणाम के प्रकाशन की तारीख के चालीस दिनों के भीतर कोई अन्य हितबद्ध पक्षकार भी अपने विचारों से अवगत करा सकता है;

(ग) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे।

(घ) अंतिम जाँच परिणामों की घोषणा करने के पूर्व प्राधिकारी आवश्यक तथ्यों का उद्घाटन करेंगे।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 31st July, 2006

Preliminary Findings

Subject : Anti-dumping investigation involving import of Bias Tyres exported from or originating in China PR and Thailand.

No. 14/9/2005-DGAD.—1. Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof.

2. WHEREAS Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA), (hereinafter referred to as the applicant) filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the Rules), alleging dumping of Bias Tyres for bus and lorries/trucks (hereinafter referred to as subject goods or Bias Tyres), originating in or exported from the People's Republic of China and Thailand (hereinafter referred to as "subject countries" or China and Thailand), and requested for initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods.

3. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, after examination of the same with regard to adequacy and accuracy, issued a public notice dated 30th December 2005 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries in accordance with the sub-Rule 6(I) of the Rules to determine existence, degree and effect of alleged dumping and the need to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. **PROCEDURE**

4. Procedure described below has been followed with regard to this investigation by the Authority.
- (i) The Authority notified the Embassy of subject country in India about the receipt of dumping application made by the Applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
 - (ii) The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 30th December 2005 to the Embassy of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, importers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
 - (iii) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the embassies of China PR and Thailand in accordance with Rule 6 supra.
 - (iv) The embassies of the People's Republic of China and Thailand in India, were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6 with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letters and questionnaire sent to the exporters/producers was also sent to them, alongwith the names and addresses of the exporters.
 - (v) The applicant requested the Authority to treat China as a non-market economy country for the purpose of present investigations. For the purpose of initiation, the normal value in China PR was considered based on the price of the subject goods in Sri Lanka after treating Sri Lanka as an appropriate third market economy country as per the information submitted by applicant. The Authority informed the known exporters from China that it proposed to examine the claim of the applicant in the light of para (7) & (8) of Annexure-I of the Anti-Dumping Rules as amended. The concerned exporters / producers of the subject goods from China PR were therefore advised to furnish necessary information/sufficient evidence, as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 to enable the Designated Authority to consider whether market economy treatment should be granted to cooperating exporters/producers who could demonstrate that they satisfy the criteria stipulated in the said paragraph. A questionnaire for according market economy treatment was forwarded to all the known exporters/producers in China and the Embassy of the Peoples' Republic of China.

- (vi) The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4);

China:

1. Yellow Sea Tyres
Dong Hai Road, Qingdao, China
2. Shangdong Hongsheng Rubber Co., Ltd
Dawang Industry Zone, Guangrao,
Shandong, China P.C 257 335
3. Qingdao Doublestar Tire Industrial Co.,
No, 95 Qingdao Road, Jiaonan Development Area,
China
4. Qingdao Tengjiang Tyre co., Ltd
No 425 Building C, Qingdao World Trade Center,
H. K Middle Road, Qingdao, China 266 071
5. Shandong Chengshan Tire Co.,
11, Rong' an Rongcheng City, Shandong Province,
China
6. Chaoyang Long March Tyre Co., Ltd
No 1, Xiangyang Road, Longcheng District,
Chaoyang City, Liaoning Province, China
7. Triangle Tyre Co., Ltd
No 56, Qingdao Middle Road, Weihai, Shangdong,
China
8. Shandong Jinyu Tyre Co., Ltd
1504 Qilimansion, No 2 Nanjing Road, Qingdao,
Shandong, China
9. Qingdao Yellow Sea Rubber Group co.,
Qingdao Rubber Industry Park, Hong Tan,
Cheng Yang Distt, Qingdao, China
10. Shandong Yongtai Chemical Group Co., Ltd
Dawang Rubber Industry Area, Guangrao, Dongying,
Shandong, P.R. China
11. Shandong Linglong Rubber Ltd
No 170 Jincheng Road , Zhaoyuan, City , Shandong,
China- 265400
12. Guangzhou Pearl River Rubber Tyre Ltd
Tanbu, Huadu, Guangzhou 510828, China
13. Henan Tyre Co Ltd
48 Jiaodong South Road, Jiaozuo, Henan,
China

Thailand

1. Hihero Co., Ltd.
408/63-64 Phaholyothin Road,
Samsennai, Phayathai, District, BKK 10400
Thailand
2. Thai Bridgestone Co., Ltd.
14/3 Phaholyothin Rd., T. Klongnueng,
A. Klong Luang, Pathumthani
Thailand 12120
3. Otani Tire Co., Ltd.
55 Mu 7, Petchkasem KM.37 Rd.,
T. Klongmai, A. Sampran, Nakornpathom
Thailand

- (vii) In response to the above notification none of the subject exporters responded to the questionnaire within the prescribed time limits. M/s. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. filed its first response on 21st June, 2006, which was grossly deficient. Additional information was provided on 21st July, 2006, which is also incomplete. Even though the response was significantly after the time limits, the Authority considered it appropriate to examine the same.
- (viii) Questionnaires were sent to following known importers and users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

Importers:

- a) M/s Chadha Tyre Traders
- b) M/s Kaks & Bills Pvt Ltd
- c) M/s Anirudha Industries
- d) M/s Vikas Road Carriers
- e) M/s International Trader
- f) M/s AAA Impex
- g) M/s Jamnadas and Brothers

Users:

- a) M/s Tata Motors Ltd
- b) M/s Volvo India Pvt Ltd
- c) M/s Ashok Leyland Ltd
- d) M/s Eicher Motors Ltd

- (ix) In response to the above notification, only M/s Tata Motors, one of the users of subject product, has responded. But the company has not filed any

questionnaire response, nor have they imported the subject product from subject countries. In addition to Tata Motors, Automotive Tyre Importers Association (ATIA), All India Tyre Dealers Federation (AITDA), All India Confederation of Good Vehicle Owner's Association (ACOGOA) have filed their submissions. None of the importers have filed response to the questionnaire. ATIA, AITDA and ACOGOA or their members have also not filed any information in questionnaire, but has advanced its argument against imposition of anti dumping duties, which have been addressed in these findings.

- (x) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCIS) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and for the period of investigations;
- (xi) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- (xii) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry. For the purpose, domestic industry was directed to provide its cost of production duly certified by a practicing cost accountant .
- (xiii) *** in this Notification represents information furnished by the applicant on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;
- (xiv) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2004 to 30th June 2005 (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from April 2001-March 2002, April 2002-March 2003, April 2003-March 2004 and the POI.
- (xv) The Authority provided opportunity to the industrial users of the product under consideration, and to the known representative consumer organizations, to furnish information considered relevant to the investigation regarding dumping, injury and causality.
- (xvi) The Authority satisfied itself with regard to accuracy of the information provided by the interested parties to the extent considered necessary at this stage

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

- 5. The product under consideration is new/unused pneumatic non radial bias tyres, tubes and flaps of rubber used in buses and lorries/trucks originating in or exported from China PR and Thailand. Bias tyres are technically known as diagonal ply or

cross ply tyres. Tyre is used along with one tube and one flap in a vehicle. One tyre, one tube and one flap is together sold as a "tyre set". The term "TTF" is prevalent in the industry to denote a "tyre set". Tyre, tube and flap jointly render the function of "tyre" in a vehicle. Air is filled in the tube inside the tyres and a flap is used in between wheel and tube to avoid tube burst due to its cohesion with the wheels. Tyre, tube and flap are produced separately by the producers. Sale of tyre, tube and flap are primarily on "TTF" or "tyre set" basis. However, they are sold individually also. Import of the product is also both on TTF basis and as individual units and can be in any combination. Bias tyre, tube and flap used in bus and lorries/trucks constitutes the product under consideration irrespective of whether they are in TTF form or individually as tyre, tube and flap.

6. The scope of the product includes only bias tyres used in buses and lorries/ trucks. Tyres are produced for use in vehicles like truck, bus, lorries, light commercial vehicles, passenger car, jeep, tractor, two wheeler, three wheeler, animal pulled vehicles, earthmover, industrial tyres, air crafts etc. However, the product under consideration is the type that is used only in buses & lorries/trucks. All other types of tyres are beyond the scope of the product under consideration and present investigations.
7. There are two categories of tyres, namely radial and non-radial. The non-radial category is known as bias or diagonal ply tyres. The categorization is based on the load-inflation pressure relationship prescribed by Indian standards. The scope of the product includes only non-radial or bias tyres used in buses and lorries/ trucks.
8. Tyres, Tubes and Flaps are produced separately. However, they are invariably used together in automotive applications. Tyres are classified in Chapter 40 under customs subheading no. 40112090 and tubes and flaps are under 40131020 and 40129049 respectively. However Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of investigation.

Comments from the Association of users and importers

9. Responding associations have filed their comments in respect of product under consideration. They have submitted that the product scope has been left very wide as the same includes very distinct size. The description of the product is not in conformity with the product being imported. The product includes different types like lug, semi rib, rib etc. and tyres are normally identifiable in terms of its size. The information provided by domestic industry does not distinguish between Heavy Commercial Vehicles (HCV) and Light Commercial Vehicles (LCV) though truck and bus tyres include both HCVs and LCVs. The imported tyres are inferior in quality and primarily substitute the retreaded tyres. The description of product needs to be modified according to sizes. There is significant difference between tyres catered to the OEMs and that to the retail market. The segmentation is required to be done while examining the injury to the domestic industry. A

Views of domestic industry

10. The scope of the product under consideration is well defined in the petition and notice of initiation and there can be no confusion in this regard. While it is true that there are different types of tyres, the same is at best relevant for the purpose of price comparison. In so far as the scope of the product under consideration is concerned, all these different types of tyres are very much within the scope of the product under consideration. There is no basis for the argument that the scope could be read so as to include even LCV tyres. However, considering the arguments of these parties, the Authority can also specify the size of the tyre alongwith other parameters in order to ensure that unintended product does not get covered within the scope of the duties.
11. Applicant has claimed that there is no significant difference between the subject product produced by the domestic producers and the products imported from subject countries. They are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, quality, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Applicant claimed that the two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. Domestic industry caters to two market segments i.e. domestic after market and domestic original equipment manufacturers. Applicants submitted that the imports are taking place in the domestic after market which holds almost 77% of tyre sale. Hence, there is a direct competition between imported material and domestic product. Indian Producers either directly or through its dealers competes with these traders/resellers for the same general category of consumers. Significant volume of sales by the applicant companies is also through resellers (almost 77%). All resellers, whether dealing in the domestic or import product are supplying the product to the same general category of customers. There is no difference in the quality of tyres supplied to OEMs or after market. BIS Certification of tyres is voluntary in nature and hence tyres with or without BIS Certification are being supplied to both OEMs and after market.

Examination by the Authority

12. As regards scope of the product under consideration, the Authority notes that the petition and notice of initiation very clearly specify the scope of the product under consideration. The product under consideration includes different types of Bias Tyres, known as lugs, semi rib, rib, etc. However, these are merely different types of the product under consideration. It is clarified that tyres for LCV are beyond the scope of the product under consideration. Having regard to the arguments of the interested parties, it however appears relevant and necessary to specify the size of tyres also for the purpose of defining scope of the product under consideration. The Authority notes in this regard that tyres of specified size only can be used for a particular application. For instance, nominal rim dia code of 16" tyre can not be used in HCVs and similarly nominal rim dia code of 20" tyre can not be used in LCV.

13. Having regard to the arguments by the interested parties, the Authority considers it appropriate to include size of the tyres also within the scope of the product under consideration. Accordingly, the product under consideration is defined as *"new/unused pneumatic non radial bias tyres with or without tubes and/or flap of rubber, having nominal rim dia code above 16" used in buses and lorries/trucks"*.
14. As regards the argument that the product meant for OEM and replacement market is different, the Authority notes that there is no evidence provided in support of this claim. Verification at the premises of the domestic industry on the contrary showed that the product meant for OEM and after market is the same. It is also noted that no evidence was made available that the imported product was eventually consumed only in replacement market and was not used in OEM.
15. Rule 2(d) of AD Rules defines Like Article as
"an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."
16. The applicants have claimed that goods produced by them are like article to the goods originating or exported from China PR and Thailand. The importers' association in their submissions have claimed that goods imported are of inferior quality. However, difference in quality does not render the product as different from the above description. The imported product is also used by same category of consumers. The product contains the same basic physical and chemical characteristics and has the same functions and uses. Such being the case, it can not be said that mere possible difference in quality renders the product imported by the importer as different from the subject product produced by the domestic industry. Further, none of the exporters/importers have provided relevant information to the Authority in this respect.

After examining the above claims, it is provisionally concluded that there is no difference in the subject product imported from China and Thailand and produced by the domestic industry. Even if it is assumed that the imported product is of lower quality, this difference in quality can not render the imported and domestic product different product within the meaning of the Rule 2(d).

C. DOMESTIC INDUSTRY

17. Rule 2(b) defines domestic industry as under:-

(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged

dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry:

18. The application was filed by Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) on behalf of the domestic industry using the information provided by M/s Apollo Tyres Ltd and M/s Ceat Ltd. Application has been supported by M/s JK Tyres (JK Industries Ltd.), M/s Birla Tyres (Kesoram Industries Ltd) and M/s MRF Ltd. Following the initiation, the Authority sought injury information from supporting companies also. In response to the same, JK Tyres and Birla Tyres showed their willingness to participate in the investigations and provided information required by the Designated Authority in the form and manner prescribed.
19. The associations who responded to the Authority have not disputed the fact that the application was filed on behalf of the domestic industry representing a major proportion of domestic producers, nor have they disputed that the participating companies constitute domestic industry. Association of tyre importers, however, claimed that some of the domestic producers are related to producers/exporters/traders in China, which is existing for long time. The Authority sought clarifications in this respect from the applicants, who certified that none of the participating companies are related to any parties in the exporting countries. M/s. Apollo International Ltd. also certified that the Company has no business alliance with any manufacturer/exporter of the product under consideration in China or Thailand for export or import of the product under consideration to the Indian market and that the Company has not imported/exported the product under consideration either from China or from Thailand under any such possible business alliance during the investigation period. Moreover, declarations in this respect were also provided by applicants in respective part of the application itself. It has not been established that those declarations are incorrect.
20. After detailed preliminary investigations, the Authority notes that (a) production of the four manufacturers i.e. Apollo Tyres Ltd, Ceat Ltd. JK Tyres (JK Industries Ltd.) and Birla Tyres (Kesoram Industries Ltd) constitute a major proportion in Indian production (b) domestic producers expressly supporting the application accounted for more than 50 per cent of the total production of the like product produced by the domestic industry; and (c) the application was made by or on behalf of the domestic industry.
21. The Authority after careful examination holds that Apollo Tyres, Ceat Tyres, JK Tyres and Birla Tyres constitute domestic industry within the meaning of the rule 2(b) read with 2(d) for the purpose of the present findings.

D. NORMAL VALUE
Claims of Applicants

22. Applicants claimed that China is a non-market economy. No country has granted market economy country status to China after following detailed evaluation

procedure, examination and evaluation. They have further claimed that even China agreed in the accession treaty that WTO Members could use an NME antidumping methodology through December 11, 2016. China has been treated as non-market economy by European Commission and United States in the past three years. European Union and United States are members of World Trade Organization. In India also, the Designated Authority has treated China as non-market economy. The Designated Authority has treated China as non-market economy in practically all the investigations initiated against China after the amendment dated 31st May, 2002. Even after the amendment dated 4th Jan., 2003, the Designated Authority has treated China as a non-market economy.

23. Applicants proposed consideration of Sri Lanka as an appropriate surrogate country for determination of normal value in China and provided information on price of subject product in the domestic market of Sri Lanka. Applicants argued that consideration of Sri Lanka would enable the Authority to procure all relevant information for the purpose of selling price in Sri Lanka. It was argued that bias tyre industry in Sri Lanka is competitive. Applicants supplemented their claim of normal value based on price in Sri Lanka with the cost of production in Sri Lanka and cost of production in India.
24. Applicants claimed that producers from Thailand are dumping subject goods in India. Efforts were made to obtain information about the prices of subject product prevailing in the domestic market in Thailand. However, no reasonable, authentic and accurate information could be obtained about the actual transaction-selling price of subject product (between a producer and wholesaler dealer/distributor) in their domestic market. In view of the same, applicants used estimates of cost of production to determine normal value in Thailand.

Comments by associations of users and importers

25. Responding associations have advanced arguments disputing treatment of Sri Lanka as an appropriate surrogate country for the purpose of normal value. They have not provided any material evidence against the applicant's request to accord Non Market Economy treatment to China. It is claimed by the Association that Sri Lanka can not be treated as appropriate surrogate country for the reasons that there is absence of enough competition in Sri Lankan market and Sri Lankan producer is related to one of the Indian producers. There is a difference in tyres supplied by the domestic industry to OEMs and retail segments. The tyres supplied to OEMs are not comparable to tyres imported from China. It is further claimed that cost of domestic industry in OEM segment need to be taken out while using the data for construction of normal value in case of Thailand.

Examination by the Authority

26. In anti dumping investigations concerning imports from non-market economy countries, normal value has to be determined in accordance with paragraphs 7 & 8 of the Annexure-I of the AD Rules.

27. The Authority notes that except Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd., none of the Chinese and Thai producers have responded to the Authority. Except Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd., none of the Chinese producers have claimed that they should be granted market economy status nor filed their responses in the prescribed questionnaires. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. claimed that the Company should be granted market economy status, which was examined and found inadequate and insufficient to determine whether the company could be provided market economy treatment.
28. Examination of claims of Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. - M/s. Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. filed its first response on 21st June, 2006, which was grossly deficient. No reasons for significant delay in filing questionnaire response beyond time limits allowed were given by the company. Further, it was found that the response filed was without any appendices forming part of the questionnaire and it was stated that the same were being filed separately. Additional information was provided on 21st July, 2006, which is also incomplete. Even though the response was significantly after the time limits, the Authority considered it appropriate to examine the same. Examination of the response shows that the same is inadequate and insufficient to allow market economy treatment. Following observations are made in respect of the response filed:-
- a) The company stated that it has no affiliated company involved with the product concerned, whereas the product brochure of the company lists a number of companies which are apparently related to the company and are involved with the product concerned.
 - b) Annual reports provided is only for 2005 and does not contain any information other than auditor's report, balance sheet and income statement. Information such as director's report, notes to accounts and other information forming part of the annual report has not been provided.
 - c) No evidence has been provided with regard to a number of claims made by the company. For instance, no evidence has been provided in respect of claims with regard to raw materials purchase. Furthermore, it is not even the claim of the company that the prices of major inputs substantially reflect market values, nor any evidence has been presented in this regard.
 - d) Whereas the response to the questionnaire stated that the audit of their accounts was not mandatory, the annual report for the year 2005 contains audit report. The company stated that the company being a private company closely held by the private family members, there is no such provision or legal requirement for auditing form an independent certified public accountant. The Authority notes that in a situation where the financial statements of the company have not been audited by an independent certified public accountant, authenticity, accuracy and reliability of the financial statements is not guaranteed. Therefore, it can not be said that the company has one clear set of basic accounting records which are independently audited in line with international accounting standards and are applied for all purposes.

- e) Transaction wise information with regard to sales in home market is not provided. In the absence of this, correctness of information provided in appendix-3A could not be ascertained.
 - f) Information in appendix-3A is only in respect of "1000-20 grade-1 trailer" and "1000-20 super-1". It is not clear whether the company has not produced and sold other types of subject goods or the information is not provided to the Authority.
 - g) Cost of production statement is not in the form and manner prescribed.
29. In view of the above, the Authority holds that the claims of the exporter are not fully substantiated and the Authority is unable to grant market economy treatment to the company at this stage. Also, the response to the Exporter's Questionnaire is not complete. Therefore, for the purpose of the preliminary findings, the Authority is unable to use the response filed. However, the Authority would consider the response of the company, if the deficiencies pointed out are rectified and complete information is provided.
30. Under the circumstances, the Authority is not in a position to apply para 8 of Annexure 1 to the Rules to any of the Chinese companies and has to proceed in accordance with para 7 of Annexure-1 to the Rules. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:
- a) on the basis of the price in a market economy third country, or
 - b) the constructed value in a market economy third country, or
 - c) the price from such a third country to other countries, including India.
 - d) If the normal value cannot be determined on the basis of the alternatives mentioned above, the Designated Authority may determine the normal value on any other reasonable basis including the price actually paid or payable in India for the like product duly adjusted to include reasonable profit margin.
31. Applicant's proposal for consideration of Sri Lanka as an appropriate surrogate country for determination of normal value in China was examined by the Authority. The applicant has provided relevant information on price of subject product in the domestic market of Sri Lanka. The applicants have also provided information with regard to cost of production in India. One of the major producer of subject product producer in Sri Lanka, M/s Ceat Kelani Associated Holding Pvt. Ltd. is a joint venture with Indian producer M/s Ceat Ltd. However, Ceat Kelani Associated Holding Pvt. Ltd. operates freely under the market situations in Sri Lanka and its relation with Indian producer in no way restrict it from its operations as per economic conditions in Sri Lanka, nor it causes any distortions in consideration of Sri Lanka as a surrogate country. The price in Sri Lanka is determined by the market forces existing in Sri Lanka and reflects the cost and price situations existing under Sri Lankan economy. Applicants supplemented its claim of normal value based on price in Sri Lanka with the actual cost of production in Sri Lanka. Further, the applicants provided evidence of normal value

on the basis of price payable in India, duly adjusted to include a reasonable profit margin, by considering cost of production in India. There is not sufficient evidence to reject the claim of applicants that Sri Lanka is an appropriate third country to determine the normal value in case of China. In fact, it is noted that the consideration of price payable in India, duly adjusted to include a profit margin would have resulted in determination of higher normal value. Having considered the evidence on record, the Authority considers it appropriate to determine normal value for the purpose of these preliminary findings on the basis of constructed value in Sri Lanka as submitted by applicant (which is the lowest among the alternatives given), pending further investigations.

32. Applicants claimed efforts were made to obtain information about the prices of subject product prevailing in the domestic market in Thailand. However, no reasonable, authentic and accurate information could be obtained about the actual transaction-selling price of subject product (between a producer and wholesaler dealer/distributor) in their domestic market. None of the producers in Thailand have responded to the Authority, nor any other information is made available to the Authority with regard to costs or prices in Thailand. Under the circumstances, the Authority has determined normal value in Thailand on the basis of estimates of constructed cost of production, duly adjusted to include a profit margin.
33. The Authority examined the claims of association of importers that the normal value need to be constructed after excluding costs applicable to tyres for OEM segment. However, it is found that there is no difference in the cost of production for OEM or for after market. In fact, difference can only come in terms of selling and distribution expenditures and that remains higher for the after market. Thus, should the Authority segregate OEM and after market cost of production, the same would at best increase the after market cost of production and consequently the normal value, as the imported tyres are being sold in the after market only.

E. EXPORT PRICE

34. Association of users and importers argued that the Authority should not have accepted the import information as per IBIS for the quarter April 05-June 05. It was claimed that the imports under the heading 40112090 include certain other tyres also which should also be excluded.
35. The applicants in their application stated that the transaction wise imports information provided by DGCI&S was not available for the period April 05 to June 05 at the time of application and therefore, the applicants had relied upon IBIS data for this period. Applicants further argued that the Authority had in a number of investigations considered information provided by IBIS for the purpose of determination of volume and value of imported material, nor any reason have been advanced by the responding parties why the information provided by IBIS may be incorrect and unreliable. The Authority notes that when DGCI&S data is not available for the complete period, it does not appear inappropriate to use IBIS information.

36. Subsequent to initiation, imports information on transaction by transaction basis was made available by the DGCI&S for the complete period of investigation. Accordingly, the import volumes and export prices have been determined on this basis. The Authority notes that barring response by Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd., there is no cooperation from any of the subject exporters nor any other information has been filed before the Authority in this regard. Response filed by Shandong Jinyu Tyre Co. Ltd. is also not complete and can not be adopted at this stage. Therefore, the Authority has determined export price on the basis of transaction wise imports information provided by the DGCI&S. The CIF export price has been adjusted for ocean freight, marine insurance, inland freight, port expenses and bank charges. The applicants claimed price adjustments on account of commission, indirect taxes and credit costs which have not been allowed at this stage.

F. DUMPING MARGIN

37. Authority notes that the comparison made must be a fair comparison. Authority has determined both the normal value and export price at ex-factory level. It is noted that the product is imported as set of tyre, tube & flap (TTF), or as a set of tyre & tube (TT), or only as tyre. Authority has determined separate normal value and export price in respect of different product combinations in which imports have been made and compared the same. Both the normal value and export price pertains to the same period. There are no known differences in the conditions and terms of sale. Both the prices are free of taxes. Thus, the Authority considers that the comparison made constitutes a fair comparison. Considering the normal value and export price determined as detailed above, dumping margin has been determined provisionally, which comes as under:-

	Dumping margin %
China	131
Thailand	229

G. INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY

Cumulative Assessment

38. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:

the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries

less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;

- (b) *cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.*
39. The Authority considered whether it would be appropriate to cumulatively assess injury to the domestic industry. As stated below, it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from China and Thailand:-
- i) The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed,
 - ii) The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed,
 - iii) Cumulative assessment is appropriate in view of the following factors :-
 - a) The goods involved are like articles and are competing in the same market;
 - b) The imported products are being sold through the same channel of distribution and to comparable category of customers;
 - c) Products from both the countries are undercutting the prices of the domestic industry in the market.
 - d) Imports from both the countries are increasing.

Market Segmentation

40. The domestic tyre market is divided in a number of segments vis OEM market (Original Equipment Manufacturers), replacement market or after market and other which consists of supplies to the government sector. Applicants argued that there was significant boom in the automobile market, leading to significant increase in the demand for the product under consideration in the OEM market and consequently sales of the domestic industry in the OEM segment, as would be seen from the following consolidated position with regard to Indian industry:-

		2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
OEM	Nos	632763	823756	1457545	1790062
	Indexed	100	130.18	230.35	282.90
Replacement Market	Nos	5823153	6567005	6741534	6518483
	Indexed	100	112.77	115.77	111.94
Others	Nos	179100	176400	175500	174600
	Indexed	100	98.49	97.99	97.49

Domestic industry has argued that there is a decline in their sales in the replacement market during POI as compared with previous year entirely because of dumped imports. The representative importers associations have also argued that it is the replacement market that they are supplying their product and they are not competing in the OEM market. In view of above the assessment of demand and volume effect has been considered only for the replacement market segment.

Assessment of demand

- 41 Authority has defined, for the purpose of the present application, demand or consumption of the product in the Country as the sum of domestic sales of the Indian Producers in the replacement market and imports from all sources. The demand so assessed is given in the table below:-

Source	Units	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Imports					
Imports (Subject Countries)	Nos	3589	16755	77538	173481
Imports (others)	Nos	8	14378	8697	10056
Sales by Indian producers in the Replacement market	Nos	5823153	6567005	6741534	6518483
Total Demand in the Replacement market	Nos	5826750	6598138	6827769	6702020

Import volumes and market share

- 42 The volume of dumped imports of subject product from subject countries and the share of the same in relation to replacement market sales in India is given in the table below.

Source	Units	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Imports					
China	Nos	3589	16509	72474	161991
Thailand	Nos		246	5064	11490
Total	Nos	3589	16755	77538	173481
Market Share					
Domestic producers	%	99.94	99.53	98.74	97.26
Subject Countries	%	0.06	0.25	1.14	2.59
Other Countries	%	0.00	0.22	0.13	0.15
Total	%	100	100	100	100

43. The Authority notes that imports from subject countries increased over the period in absolute terms and also in relation to imports into India and sales in the replacement market in India and consumption in India.
44. From the above, it is evident that imports from subject countries have shown an increase during the injury period, resulting in increase in market share of dumped imports and decline in the market share of the domestic industry during POI as compared with base year 2001-02. The Authority provisionally concludes that the dumped imports show adverse volume effect.

Price effect of imports

45. Net sales realization of the domestic industry has been arrived at by considering selling price, excluding taxes & duties. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The trend of various prices is as given in the table below:-

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
CIF export price					
China	Rs/Sets	2413.97	1758.65	1723.07	2000.39
Thailand	Rs/Sets	1707.40	1671.75	1591.33	1849.99
Subject Countries	Rs/Sets	2413.97	1757.47	1719.19	1992.18
Landed Value					
China	Rs/Sets	3145.40	2291.52	2071.14	2364.06
Thailand	Rs/Sets		2224.75	2009.45	2186.32
Subject Countries	Rs/Sets	3145.40	2289.98	2066.47	2354.36
Cost of Production	Indexed	100	99.53	105.27	112.26
Selling Price of Domestic industry	Indexed	100	101.19	104.80	111.56
Price Undercutting					
China	% range	40-50	50-60	60-70	60-70
Thailand	% range		50-60	60-70	60-70
Subject Countries	% range	40-50	50-60	60-70	60-70

46. It is noted that
- CIF export price from China showed declines over the base year i.e. 2001-02. However, there was an increase in price during the POI as compared to preceding years. Thailand has showed an increase in price but remained even below the prices offered by China.
 - Landed price of imports from China and Thailand have been significantly below the selling price of the domestic industry and non injurious price of

domestic industry, resulting in significant price undercutting and price underselling.

- c) Imports are suppressing the prices of the domestic industry in the market and are preventing the price increases that would have otherwise occurred in the absence of imports.

47. Considering the above, the Authority provisionally concludes that the effect of dumped imports on the domestic industry has been adverse in terms of volume and price.

Economic Parameters of the Domestic Industry

48. The dumping of subject product from subject countries became significant in the year 2003-04 and during the POI. Comparison of different parameters in the base year i.e. 2001-02 with the POI alone wouldn't reflect the actual impact of dumped imports on the domestic industry. Given significant surge in automobile production and consequent positive impact on the domestic industry, applicants claimed that certain parameters relating to the performance of the domestic industry would show improvements over this period, to reflect the market growth. It is pointed out by the applicants that increase in automobile production by one unit increases sales of the subject goods between 7 to 23 units. Therefore, it is considered appropriate to examine the performance of the domestic industry on year to year basis, having regard to the significant surge in demand of the product.
49. Evaluation of all relevant economic factors to assess the situation of the industry in terms of actual and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity, factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping, actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments are discussed herein below.

Production, capacity and capacity utilization

50. Actual production, capacity and capacity utilization of the domestic industry over the years was as shown in the table below. The Authority notes that the capacity for production of the subject goods can be utilized to produce other types of tyres also. Therefore, it would not be appropriate to determine capacity and capacity utilization considering only the product under consideration. The Authority has determined capacity and capacity utilization considering different types of tyres produced and sold by the domestic industry for which the capacity has been interchangeably used, having regard to the provisions of Annexure-II to the Rules.

Trend	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Plant Capacity	Nos	12554305	13133648	14078159	16802293
	Indexed	100	104.61	112.14	135.80
Production all types of tyres, including non subject goods	Nos	9239853	11871471	13431187	15005212
	Indexed	100	128.48	145.36	162.40
Plant Utilization	%	78.60	90.39	95.40	89.30
	Indexed	100.00	115.00	121.38	113.62

234561/06-7

Production of subject goods of Domestic Industry	Nos	6242468	7218501	7987559	8171154
	Indexed	100	115.64	127.96	130.90
Sales of the Domestic Industry	Nos	5065878	5757989	6272224	6447173
	Indexed	100	113.66	123.81	127.27
Inventories	Nos	213309	203028	318699	343584
	Indexed	100	95.18	149.41	161.07

The Authority note that;

- Plant Capacity, production, sale and plant utilization showed a growth of 35.80%, 30.90%, 27.27% and 13.62% respectively over the period.
- Production and sale of domestic industry increased over the injury period. However, capacity utilization declined after increasing.
- Even though production and sales in POI shows increase as compared to preceding year, the same is less than market growth, resulting in increase in inventories and decline in capacity utilization. It is also noted that the domestic industry lost market share in the investigation period.
- Increase in production of other types of tyres is more than increase in production of the subject goods. This shows that the domestic industry utilized the capacities more for non subject goods.

Profits and return on investment

51. Profits and return on investment of the domestic industry over the years are given below.

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Selling Price	Indexed	100	101.19	104.80	111.56
Cost of Production	Indexed	100	99.53	105.27	112.26
Profit/loss per unit	Indexed	100	140.88	93.52	94.72
Return on capital employed	%	15.63	15.08	10.49	11.45
	Indexed	100	96	67	73.29

It is observed that:-

- Selling price and cost of production of the domestic industry increased by the POI. Whereas the domestic industry was able to in fact increase its prices more than the cost increases in 2002-03, the domestic industry was faced with a situation where the cost increases were more than the price increases thereafter.
- Whereas profitability of the domestic industry improved between 2001-02 and 2002-03, the same declined thereafter. Profitability per unit of the domestic industry in the investigation period were significantly below 2002-03 levels, inspite of significant increase in the sales volumes.
- Return on capital employed declined over the injury period. Thus, higher production and sales volumes resulted only in decline in returns to the domestic industry.

Changes in market share of Indian Industry

52. Market share of Indian industry in the replacement sale and that of imports is given in the table below;

Market Share in Replacement sales in India of subject goods					
	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Domestic producers	%	99.94	99.53	98.74	97.26
Subject Countries	%	0.06	0.25	1.14	2.59
Other Countries	%	0.00	0.22	0.13	0.15
Total	%	100	100	100	100

It is observed from the above that;

- The share of domestic industry in the domestic replacement market sales declined.
- The market share of dumped imports which was negligible at 0.06% during the period 2001-02 reached to a significant level of 2.59% by the POI.
- There is a co-relation between increase in share of dumped imports and loss of market share by domestic industry.

Employment

53. Employment situation of the domestic industry is given in the table given below:

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
No. of employees	Nos	15521	17839	18232	18274
	Indexed	100	115	117	118
Number of persons per one lac nos. capacity	Nos.	123.63	135.83	129.51	108.76

It is observed that:

- The number of employees with the domestic industry showed increases over the injury period.
- The increase in number of employees is the result of increase in capacity and production.
- Number of persons employed by the industry per one lac nos. of tyre capacity declined over the injury period. Thus, the increase in employment is not in proportion to the increase in capacity.

Wages

54. Wages and impact of the same on cost of production are given in the table below.

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Wages	Rs Lacs	9140	13189	14424	14743
	Indexed	100	144	157	161
Wages per unit of production	Rs/Set	200	230	231	229
	Indexed	100	115	115	114

- a) It is observed that wages increased over the injury period.
- b) Wage cost increases reflect normal wage increase and increases due to increase in employment level.

Productivity

55. Productivity of the domestic industry over the periods is given in the below given table.

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Productivity	Nos	351	404	438	447
	Indexed	100	114.98	124.49	127.06
No. of employees	Indexed	100	114.93	117.47	118
Production	Indexed	100	115.64	127.96	130.90

56. The Authority notes that productivity of the domestic industry shows improvements. However, in spite of increase in productivity, the profits of the domestic industry have declined after showing improvements.

Factors affecting domestic prices

57. The imports from subject countries are resulting in significant price undercutting and price underselling in the Indian market. The landed price of imports is significantly below the selling price and non injurious price of the domestic industry. The situation in this respect is given in the table below:

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Price Undercutting					
China	% range	40-50	50-60	60-70	60-70
Thailand	% range		50-60	60-70	60-70
Subject Countries	% range	40-50	50-60	60-70	60-70

58. The Authority determined the extent of price underselling by comparing the non injurious price with the landed price of imports. The comparison shows as follows:-

	Range during POI
China	60-70
Thailand	60-70
Subject Countries	60-70

It is noted that

- a) Landed price of imports from China and Thailand has been significantly below the selling price of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.
- b) Landed price of imports from China and Thailand has been significantly below the non injurious price of the domestic industry, resulting in significant price underselling.
- d) Imports are suppressing the prices in the market, as the imports are preventing the price increases commensurate with cost increases.

Inventories

59. Inventories of finished goods with the domestic industry have shown the following trend.

Trend	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI Annualized
Inventories	Nos	213309	203028	318699	343584
	Indexed	100	95.18	149.41	161.07

60. It is noted that Inventories with the domestic industry increased over the period. This increase in inventories is in spite of decline in capacity utilization.

Ability to raise investments

62. The domestic industry claimed that should the dumping continue persistently, they would have difficulty in raising capital, which is quite important particularly in a situation where the constituents of the domestic industry are planning significant investments.

Cash flow

63. Cash flow and cash profit situation of the domestic industry showed the following trend:

	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Cash profit per unit of sales	Trend	100.00	130.05	95.93	95.29

64. Cash profits per unit of sales increased upto 2002-03 and thereafter declined even below the levels achieved in 2001-02.

Growth

65. Growth of domestic industry considering various parameters were analyzed and the trends were found as under:

Source	Unit	2002-03	2003-04	POI Annualized
Growth in sales volume	%	13.66	8.93	2.79
Growth in unit selling price	%	1.19	3.57	6.45
Growth in cost of production	%	-0.47	5.77	6.64
Growth in production	%	15.64	10.65	2.30
Growth in profit (PBT Per Unit)	%	40.88	-33.61	1.28

66. The domestic industry is facing negative growth in terms of price parameters. Even though volume parameters such as production & sales volumes show positive growth, it is found that the rate of growth is declining.

Assessment on injury

67. After examination of various injury parameters, the Authority provisionally concludes that
- There has been increase in the volume of dumped imports from the subject countries in absolute terms as also in relation to total imports and replacement market demand of the subject goods in India. As a result, market share of the domestic industry has declined.
 - The imports are causing significant price undercutting resulting in price suppressing effect on the domestic industry.
 - Even though production and sales volumes of the domestic industry increased, the capacity utilization has shown a decline after improvement, whereas market share of the domestic industry has declined.
 - In spite of increase in production and sales, profits of the domestic industry per unit of sales declined after increasing in 2002-03. As a result of deterioration in profits, cash profits and return on capital employed declined.
 - Decline in the market share resulted in increase in inventories with the domestic industry in spite of lower capacity utilization.
68. The Authority provisionally concludes that the various parameters relating to domestic industry collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury.

Arguments against injury to the domestic industry

69. Following arguments have been advanced by the responding associations of users and importers stating that the domestic industry has not suffered injury:-
- It has been submitted that the domestic industry has not suffered any material injury. It has also been argued that the adequacy and accuracy of the various information provided by the applicant were not seen and the Authority violated Rule 5 while initiating the investigation. The domestic industry showed improvements in almost all the parameters. The imports from subject countries remained very insignificant over the years.

- b) Applicant deliberately took 15 months POI in which two peak seasons are involved. It was submitted by the domestic industry itself that the period between February and June marks maximum consumption of the product. Situation during such season are factored in and then annualized to give totally incorrect projections.
- c) Differentiation needs to be done for products for OEM segment and after market as the product for OEM segment is totally different from that to the after market. Such difference in product perhaps prevented the applicant from inclusion of JK Tyres data from the petition as the company is primarily selling in OEM segment.
- d) Tyre imported from subject countries can not be compared to domestic products in terms of quality as the imported products are inferior in quality and they are in no way competing with the domestic product. Hence, there is no causal link between injury suffered by the industry, if any, and imports from subject countries.
- e) There is cut throat competition between domestic producers.
- f) Radicalization in other countries provided good export opportunities for the domestic producers of bias tyres. The growth in the output of the Tyre industry has not kept pace with the growth in the bus and truck segment. The growth rate of tyre export has been sustained in 2004-05 and is increasing. Growth in exports is reducing the availability of tyres for domestic OEM and replacement markets.
- g) Tyre manufacturers have resorted to five price increases with Tata Motors in the last two years. Large portion of the increase can be attributed to opportunistic pricing. Further M/s TATA Motors faced erratic supplies by domestic industry.
- h) Truck tyre price has an impact on the movement of goods in the country. As truck transport is the major transport system it is important to keep it cheaper to keep the price of the goods affordable. After diesel, cost of tyres constitutes the major cost for transporters.
- i) The applicants claimed confidentiality to all the information without any reasoning. Applicant has not provided the indexed version of costing information. Certain critical questions like purchase policy, sales policy, store accountings, quality control and testing conveniently neglected by domestic industry in their application.
- j) No threat of material injury visible to the Indian producers.
- k) There is no discriminatory price for India as Foreign Producers are exporting at the same price to other third countries.
- l) Segment results of Apollo is in clear contradiction with the proforma IV-A. The Apollo annual report for 2004-05 mentioned declines in demand for the product whereas proforma showed increase in demand.
- m) There is no price suppression for Apollo. Cost increases are passed on to the customers by the domestic industry.
- n) Injury information of supporters must also be seen by the Authority.

Examination by the Authority

70. The Authority examined these submissions of the interested parties and holds that
- a) The petition was examined for accuracy and adequacy prior to initiation. The investigations were initiated only after such an examination which showed that the domestic industry has prima facie suffered injury.
 - b) The various injury parameters relating to injury to the domestic industry in the subject product clearly shows that the domestic industry has suffered injury as a result of dumping from subject countries.
 - c) It is true that the imports are primarily taking place in the after market segment. However, this has not distorted the injury analysis. On the contrary, should the volumes of the domestic industry be taken only for after market, it will be showing higher extent of injury suffered by domestic industry both in terms of volume and price.
 - d) It has not been established that the quality of imported product and that of the domestic product are so significantly different that the domestic products is not a like product to the imported product. Evidence shows that whereas sales of the domestic industry have declined, imports have increased.
 - e) The POI considered is not inconsistent with the legal provisions. In any case, inclusion of two seasons at best has shown lower extent of injury to the domestic industry.
 - f) There is no difference either in the product or in the factory cost of production for OEM segment and after market segment.
 - g) Existence of competition amongst the Indian producers does not mean no injury from dumped imports. In spite of internal competition, the domestic industry was able to improve between 2001-02 and 2002-03. Situation started deteriorating from 2003-04, when imports started hitting the market. Profitability deteriorated further in the POI when dumped imports increased.
 - h) It is found that export volumes of the domestic industry have shown an increase. However, given that the capacity utilization of the domestic industry declined, in the absence of any evidence, it could not be established that domestic industry was not able to increase its production in spite of increase in demand (in fact, it is found that the imports are primarily in after market and entire OEM demand was met by the Indian Producers) or availability of the product in the market got reduced (inventories with the domestic industry have in fact increased).
 - i) It is found that the domestic industry has increased its prices. However, it is found that the profits of the domestic industry have declined in spite of increase in selling prices, which clearly establishes that the cost increases were more than the price increase.
 - j) The argument of erratic supplies has not been established with evidence.

- k) The imports of the product were negligible earlier. Further, the Authority is recommending benchmark form of anti dumping duties, which would ensure that the prices of the product would not be unreasonable.
- l) The applicant have given justification for claiming confidentiality, which was examined by the Authority and it was found that the applicant has claimed confidentiality in accordance with the Rules.
- m) Even if the tyre companies have purchased the goods from the market. However, it is not established that these purchases were of the imported goods.
- n) Injury to the domestic industry is required to be seen "for domestic industry as a whole" and not for individual companies. Analysis of data of domestic industry as a whole shows that the domestic industry has suffered injury from dumped imports.

H. CAUSAL LINK AND ANALYSIS OF OTHER FACTORS

71. Authority examined whether other parameters could have contributed to injury to the domestic industry. Following parameters were analyzed.
- a) Imports from Third Countries- Imports of subject product from other countries are either negligible (de minimis) or the export price is significantly high. Imports from other countries do not appear to have caused injury to the domestic industry.
 - b) Contraction in Demand- Demand for the subject goods have increased. Possible contraction in demand does not appear to have caused injury to the domestic industry.
 - c) Pattern of consumption: - No significant change in the pattern of consumption has been noticed. The product supplied by the domestic industry is directly competing with that of imported material from subject countries. Demand for the product under consideration has shown an increase and it does not appear that the pattern of consumption has caused injury to the domestic industry.
 - d) Conditions of competition: - No evidence of conditions of competition or trade restrictive practices having caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of the Authority.
 - e) Developments in technology:- There appears no significant change in technology over the injury period which could have caused injury to the domestic industry, nor any evidence of developments in technology having caused injury to the domestic industry have been brought to the notice of the Authority.

- e) Export performance of the domestic industry:- Export performance of the applicant has not deteriorated. In fact, export volumes of the domestic industry shows an increase. With regards to profits, export performance of the domestic industry has been segregated and only domestic performance considered while assessing injury for product concerned in the domestic market.
- f) Productivity: - Productivity of the domestic industry has increased as a result of increase in production. Possible deterioration in productivity is therefore not a possible reason for injury to the domestic industry.

Factors establishing causal link

72. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has deteriorated due to dumped imports from subject countries. This is established by the following:-

- a) Landed price of imports from the subject countries were significantly below the selling price and cost of production of domestic industry causing significant price undercutting. As a direct consequence, the domestic industry was unable to achieve sales realization to the extent of cost increases. Resultantly, the domestic industry suffered price suppression.
- b) Positive price undercutting and consequent price suppression faced by the domestic industry resulted in deterioration in profits, cash flow and return on investments.
- c) Significant positive price undercutting resulted in increase in market share of imports from the subject countries. As a direct consequence, while the market share of dumped imports in demand in India increased, that of domestic industry declined.
- d) Existence of significant price undercutting and consequent decline in market share of the domestic industry resulted in a situation where the domestic industry was unable to increase its sales and production volumes in spite of higher market demand. Consequently, capacity utilization also suffered.

73. The Authority thus provisionally holds that dumped imports from subject countries have caused deterioration in performance of domestic industry.

I. Indian industry's interest & other issues

74. It was argued by users that the truck transport acts as a lifeline of the commerce of the country and logistics and movement goods. Tyre price has an impact on the movement of goods in the country and the price of the goods. Hence, it is important to keep the mode of transportation cheaper to keep the price of goods at

affordable limits. For a truck operator tyre prices stands next to diesel in terms of expenditure.

75. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

J. Conclusions

76. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:
- a) The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
 - b) The domestic industry has suffered material injury;
 - c) The injury has been caused by the dumped imports from subject countries.

K. Recommendations

77. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having provisionally established positive dumping margin against the subject countries, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of provisional duty is required to offset dumping and consequent injury pending completion of the investigations.
78. Therefore, Authority considers it necessary and recommends provisional anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.
79. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the difference between the amount mentioned in Col. 9 of the table below and landed value of imports be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty Table

Sl. No.	Sub-Heading Or Tariff Item	Description Of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Reference price	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	China PR	Any	Any	Any	6.98	Per piece	US \$
2.	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	China PR	Any	Any	Any	3.50	Per piece	US \$
3.	40112090	New/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	China PR	Any	Any	Any	88.82	Per piece	US \$
4.	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	Any	China PR	Any	Any	6.98	Per piece	US \$
5.	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	Any	China PR	Any	Any	3.50	Per piece	US \$
6.	40112090	new/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	Any	China PR	Any	Any	88.82	Per piece	US \$
7.	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	Thailand	Any	Any	Any	8.50	Per piece	US \$
8.	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	Thailand	Any	Any	Any	4.26	Per piece	US \$
9.	40112090	new/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	Thailand	Any	Any	Any	108.27	Per piece	US \$
10.	40131020	Inner tubes of rubber for buses and lorries	Any	Any	Thailand	Any	Any	8.50	Per piece	US \$
11.	40129049	Tyre flaps of rubber for buses and lorries	Any	Any	Thailand	Any	Any	4.26	Per piece	US \$
12.	40112090	new/unused pneumatic non radial bias tyres of rubber, having nominal rim dia code above 16"	Any	Any	Thailand	Any	Any	108.27	Per piece	US \$

80. For imports made in a combination of tyres, tubes and flaps, the reference price shall be the sum of the reference price of the parts of the combination. For example, reference price in case of imports of a set of tyre, tube & flap (TTF) from China, the reference price shall be the sum of the reference prices of tyre, tube & flap, i.e., sum of 88.82, 6.98 and 3.50, i.e., 99.30 US \$

L. Further Procedures

81. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-
- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final finding;
 - (b) Exporters, importers, applicants and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
 - (c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
 - (d) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority